ISSN 2455-9644

# आसरा मुक्तांगन

दिसंबर–2024

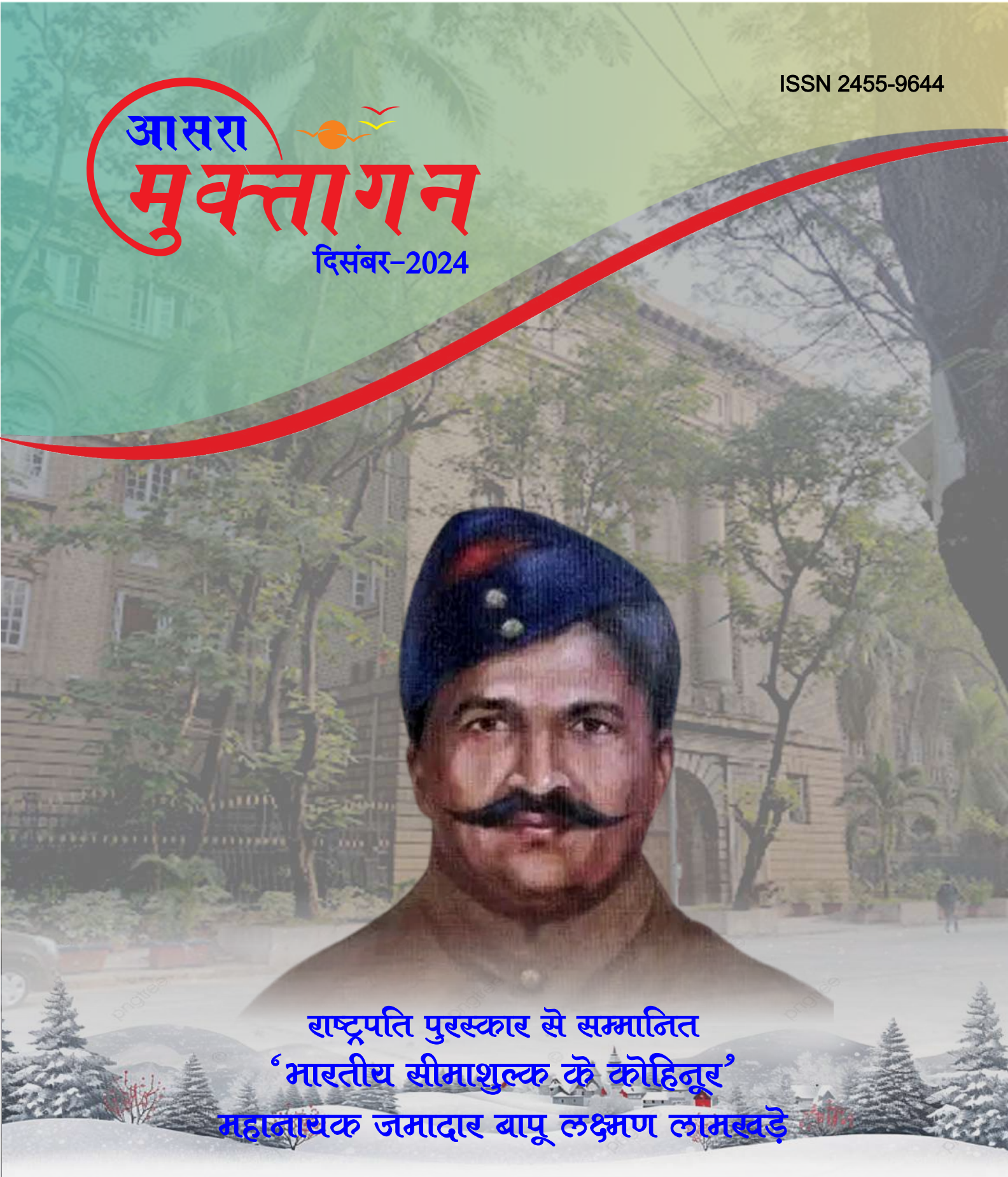

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित
'भारतीय सीमाशुल्क के कोहिनूर'
महानायक जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे़

₹ 30/-

समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान

# सीमाशुल्क नौजवान का सामाजिक सरोकार

26 नवंबर संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष गांधी बाल मंदिर हाईस्कूल, कुर्ला में संविधान दिवस मनाया गया और मुंबई हमले में शहीद हुए वीर जवानों को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर तिमिरातुनी तेजाकडे इस संस्था के संस्थापक, मुंबई सीमाशुल्क विभाग में कार्यरत अनुवाद अधिकारी, श्री सत्यवान यशवंत रेडकर मुख्य मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित थे। सरकारी नौकरियों के लिए प्रतियोगी परीक्षा हेतु मार्गदर्शन रेडकर सर द्वारा प्रदान किया गया। सर ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की महत्वपूर्ण जानकारियों को मजेदार तरीके से समझाया। इस अवसर पर आठवीं-दसवीं कक्षा के विद्यार्थी उपस्थित थें। छात्रों ने व्याख्यान का भरपूर आनंद लिया और रेडकर सर से वादा किया कि हम प्रतियोगी परीक्षा में सफल होंगे। 'ज्ञानदान' उनकी प्राथमिकता है। श्री सत्यवान रेडकर ने अब तक 300 से भी अधिक मार्गदर्शन व्याख्यान बिना किसी मानदेय एवं बिना यात्रा भत्ता लिए पूर्ण किए हैं। उनके सभी व्याख्यान पूर्णतया निःशुल्क होते हैं।

उक्त कार्यक्रम में विद्यालय के सभी शिक्षक एवं पर्यवेक्षक उपस्थित थे। प्राचार्य महोदय, अनिल पांचाल सर ने इस कार्यक्रम में गणमान्य अतिथियों का अभिनंदन और स्वागत किया।

You can also follow us on and "Aasara Muktangan"

प्रकाशक-मुद्रक
**महानंदा शिरकर**

प्रधान संपादक
**डॉ. रमेश मिलन**

संपादक
**डॉ. विमलेश शिरकर**

प्रबंध संपादक
**मोहन शिरकर**

कार्यकारी संपादक
**पवित्रा सावंत**

उप-संपादक
**डॉ. रमेश यादव, गुरुप्रित**

**संपादकीय मंडल**
- डॉ. सुलभा कोरे
- डॉ. सतीश पाण्डेय
- प्रो. कुसुम त्रिपाठी
- श्री स. वि. लव्हटे
- श्री संजय भारद्वाज
- श्री बाळकृष्ण लोहोटे

**सलाहकार मंडल**
- गयाचरण त्रिवेदी
- डॉ. चंद्रशेखर आष्टीकर
- सरिता आहुजा (कनाड़ा)
- माधवराव अंभोरे
- जानकी प्रसाद, दिल्ली

**समन्वयक एवं प्रवक्ता**
- डॉ. रत्नाकर सं. अहिरे

**जनसंपर्क एवं विशेष आयोजन**
- बाळकृष्ण ताम्हाणे
- किशन नेनवानी
- घनश्याम कोळंबे
- दिनेश सिंह
- राजकरन पाण्डेय
- दत्तात्रय कावरे

**विधि सलाहकार**
- ऍड. रमेश शाह

**विशेष प्रतिनिधि**
- डॉ. वेणुगोपाल कृष्ण, चेन्नई
- आशीष कुमार, मुंबई

**प्रबंध सहयोग**
**राम विलास शास्त्री**
मोबाइल : 8920111592, 991077754

आसरा
# मुक्तांगन
www.aasaramuktangan.com

दिसंबर-2024 वर्ष : 13, अंक : 4

## इस अंक में

**संपादकीय-**
डॉ. विमलेश शिरकर 5

**मुंशी प्रेमचंद-**
कफन 7

**मईनुदीन कोहरी-**
भव्य शादी समारोह समाज को किस दिशा में ले जाएंगे 12

**नीरजा हेमेन्द्र-**
मेरे साथ तुम हो 13

**सीताराम गुप्ता-**
क्रिसमस का वास्तविक चरितार्थता सेवाभाव में ही है 21

**बाळकृष्ण लोहोटे-**
'भारतीय सीमा शुल्क के कोहिनूर'
महानायक जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे 23

**विजय गर्ग-**
पंजाब में गणित विश्वविद्यालय स्थापना की आवश्यकता 26

**डॉ. सुलभा कोरे-**
जीवन यात्रा 27

**सुनील कुमार महला-**
मित्रता का यह अटूट रिश्ता 29

**हृषिकेश शरण-**
उम्र से नहीं, ज्ञान से होता है व्यक्ति बड़ा 32

**संजुला सिंह 'संजू'-**
अयोध्या में दीपोत्सव 33

**राम विलास शास्त्री-**
संत निकोलस- दयालुता और उदारता की प्रतिमूर्ति 35

**अवनीश कुमार गुप्ता-** सनातन संस्कृति 38

**डॉ. कविता विकास-** ग़ज़ल 38

**डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव-** मैं अकिंचन 39

**राकेश मुटरेजा-** सादा शादियाँ एवं आध्यात्म का अनुपम दृश्य 40

**गतिविधियां-** 41

आसरा मुक्तांगन


## अकादमिक मंडल

**न्यायमूर्ति अनंत डी. माने**
उच्च न्यायालय, मुंबई (सेवानिवृत्त)

**श्री ऋषिकेश शरण**
प्रशासक

**डॉ. नरेशचंद्र**
प्रतिकुलपति, मुंबई वि.वि. (सेवानिवृत्त)

**डॉ. माधुरी छेड़ा**
शिक्षाविद

## साहित्य मंडल

**डॉ. सूर्यबाला**
साहित्यकार

**डॉ. दामोदर खड़से**
साहित्यकार

**डॉ. रामजी तिवारी**
शिक्षाविद-समीक्षक

**डॉ. दामोदर मोरे**
मराठी कवि

## सहयोग

**राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, वर्धा**

**धनंजय शिंदे**

**सुनील पाटिल**

**शबाना पटेल**

**श्रद्धा गांगन**


# ‘आसरा मुक्तांगन’ का अभियान ‘वृक्ष लगाएं, बढ़ाएं’

वर्तमान में तापमान हर जगह बढ़ रहा है। पसीना, गर्मी और उससे उत्पन्न तकलीफें...मानव झुलस रहा है, जमीन तप रही है, उसमें दरारें पड़ रही है, पशु-पक्षी आदि सभी जीव गर्मी में झुलस कर मर रहे हैं और पेड़-पौधे भी पानी के अभाव में सूख रहे हैं।

यह है ‘ग्लोबल वार्मिंग’ का परिवेश, जो हम सबको एक ऐसे माहौल की ओर ले जा रहा है, जहां हमारे विश्व, हमारी भविष्यगत पीढ़ी को बहुत कुछ भुगतना पड़ेगा। हमने घर, रास्ते बनाएं; हमने अपने लिए संरचनात्मक सुविधाएं जुटायी और इन सब बातों को अंजाम देने के लिए हम वृक्षों को काटते गए।

वृक्ष इस पृथ्वी का सहारा, हमारा पनाहगार जो भूमि के अंदर जाकर अपनी जड़ों से पानी को संवर्धित करता है और जमीन से ऊपर बढ़कर बादलों को आसमान से नीचे उतरवाकर बरसात करवाता है तथा हमें छांव देकर कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम करते हुए ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है।

वृक्ष का महत्व, पर्यावरण में उसकी उपयुक्तता असाधारण है, जिसे हमें जानना, पहचानना और समझना होगा। अन्यथा हम स्वयं भी झुलसते रहेंगे और हमारी भविष्यगत पीढ़ी को इससे भी ज्यादा झुलसाते रहेंगे।

पर्यावरण के संवर्धन को ‘आसरा मुक्तांगन’ ने अपना जीवन उद्देश्य बनाया है। हर परिवार दो-तीन वृक्ष लगाएं, उनका संवर्धन करें। इसलिए ‘आसरा मुक्तांगन से संबंधित सभी संस्थाओं, सदस्यों, समर्थनकर्ताओं, संरक्षकों तथा भारत के सभी परिवारों से अनुरोध है, अपील है कि वे ‘वृक्ष संवर्धन अभियान’ के बारे में अपने क्रियाकलापों, गतिविधियों से संबंधित फोटो- जानकारी के साथ नीचे दिए गए पते पर ‘आसरा मुक्तांगन’ हेतु प्रेषित करें। आपके प्रयासों को उचित स्थान और प्रोत्साहन देना, हमारा काम होगा...


**आसरा मुक्तांगन, पोस्ट बैग-01,**
**कलवा, ठाणे-400605 महाराष्ट्र, भारत**
**ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com**


## ‘आसरा मुक्तांगन’ के संदर्भ में

‘आसरा मुक्तांगन’ राष्ट्रभाषा हिंदी तथा राष्ट्र को समर्पित एक साहित्यिक मासिक पत्रिका है। समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य और अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए एक सशक्त राष्ट्र की नींव को परिपुष्ट करना पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है। नवयुवकों, नारी तथा बुजुर्गों में जागृति का संचार करना तथा देश में घर-घर तक साहित्य और संस्कृति के उच्चतम संस्कारों को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लक्ष्य पूर्ति हेतु, पत्रिका सतत प्रयत्नशील है। पत्रिका का प्रकाशन ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की भावना से ओतप्रोत प्रकाशक एवं संपादक मंडल का एक सारस्वत अभियान है। **–आसरा मुक्तांगन**

## संपादकीय- डॉ. विमलेश शिरकर

# त्योहार हैं जीवन के रंग

मित्रो! सप्रेम अभिवादन! त्योहार हमें जीवन की नीरसता से मुक्ति दिलाते हैं। त्योहार हमें आपसी वैमनस्य को भुलाकर एक-दूसरे से प्रेम के बंधन में बंधना सिखाते हैं। त्योहारों से सांस्कृतिक सद्भाव का वातावरण बनता है। त्योहारों के माध्यम से जीवन के नैतिक सामाजिक मूल्य मनोरंजन के साथ मिल जाते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जो कुछ सामाजिक बंधनों और रिश्तों की सुनहरी डोर से बंधा हुआ है। व्यक्ति संपूर्ण जीवन व्यस्त रहता है इन सबसे कुछ राहत पाने तथा कुछ समय हर्षोल्लास के साथ, बिना किसी तनाव के व्यतीत करने के लिये ही मुख्यत: पर्व एवं त्योहार मनाने का प्रचलन हुआ। इसीलिये समय-समय पर वर्षारंभ से वर्षांत तक वर्षपर्यन्त कोई न कोई त्योहार मनाये जाते हैं।

पर्वों को मनाने के कई कारण हैं जिनमें से एक मुख्य कारण यह भी है कि इन विभिन्न पर्व एवं त्योहारों के माध्यम से हमारी सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपरा की अविरल धारा निर्बाध गति से सदैव प्रवाहित होती रहे।

पर्वों में महापर्व 'दीपावली' का तो कहना ही क्या? अत्यंत प्राचीन काल से दीपावली को 'पंचपर्व' के रूप में मनाने की प्रथा रही है। ऐसी धार्मिक मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने नवरात्रों में देवी शक्ति स्वरूपा भगवती की अटूट आराधना की और फिर रावण से युद्ध किया जिसमें उन्हें विजय श्री की प्राप्ति हुई, और तभी से दशमी तिथि को 'दशहरा' के रूप में मनाया जाने लगा और फिर जब भगवान श्री राम अयोध्या वापस आये तो उनके स्वागत में अयोध्या वासियों ने दीप प्रज्ज्वलित किये, जो आज दीपावली के रूप में हम मनाते आ रहे हैं।

बच्चों के लिए एक नवचेतना का निर्माण करने वाला क्रिसमस। हम मानते हैं कि छोटे बच्चे भगवान का मासूम, सच्चा रूप होते हैं।

उनके जीवन में संस्कार, सद् विचार, सद्भावना और अच्छे गुणों का पोषण करने का काम माता पिता का होता है। ये संस्कार ही उनके भविष्यगत जीवन की नींव होती है, जो उनकी प्रगति और उन्नति में अहम् भूमिका निभाती है।

बड़े होकर बच्चे जब स्कूल और कॉलेज में दाखिल होते हैं, शिक्षकों की जिम्मेदारी बढ़ती है और बच्चों की भी। क्योंकि आगे चलकर क्या बनना है, यह बात उन्हें ही समझनी और तय करनी है। आजकाल के बच्चे इस मामले में बहुत होशियार और दुनिया के साथ जुड़ाव रखते हैं। अपने कैरियर और भविष्य के प्रति जागरूक हैं। भारत का भविष्य इन्हीं के हाथों में है। यहीं बच्चे क्रिसमस का संदेश विश्व में फैलायेंगे।

1960 के दशक में भारतीय सीमाशुल्क के इतिहास में प्रथम राष्ट्रपति पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, ऐसा अनोखा व्यक्तित्व यानि स्व. जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे! स्मगलर्स और अंडरवर्ल्ड को टक्कर देनेवाले तथा उन्हें हिलाकर रख देनेवाले इस एकमात्र शूरवीर ने मुंबई के कस्टम्स विभाग को इतिहास में स्थापित किया और वे स्वयं उस इतिहास में कोहिनूर बन गये। मुंबई कस्टम्स के इतिहास का

एकमात्र प्रेरणादाई उदाहरण जिन्होंने अपने बुद्धि कौशल्य, ईमानदारी और सतर्कता से मुंबई कस्टम्स का नाम रोशन किया। इसी माह 4 दिसंबर 2024 को उनकी 46वीं पुण्यतिथि पर 'आसरा मुक्तांगन' की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि। ऐसे प्रेरणादायक व्यक्तित्वों की जानकारी आज के बच्चों, युवाओं को होना बहुत जरूरी है।

भारतीय घटना के शिल्पकार डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर जिन्होंने देशवासियों को संविधान दिया। उस महामानव डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर की स्मृति को हमारा विनम्र अभिवादन! उनका कार्य, उनका जीवन आज के युवाओं के लिए निश्चित रुप से प्रेरणादाई हैं।

दिसंबर माह अर्थात् अंग्रेजी वर्ष का अंतिम माह। इस माह ने हमें अनेक प्रेरणादाई व्यक्तित्वों से परिचय करवाया है तथा आने वाले नये वर्ष का आगाज भी करवाया है। इसलिए आने वाले वर्ष में हमें क्या क्या करना है, इसका लेखा-जोखा भी हमें लेना होगा। यह बहुत बड़ा कार्य है और आपने इसे किया होगा, इसका मुझे विश्वास है। नया वर्ष आपके लिए सुख, समृद्धि, शांति के साथ सकारात्मक सोच लेकर आये, यहीं शुभकामनाएं। इस अंक से संबंधित आपके सुझाव, सूचनाओं तथा प्रतिक्रियाओं का भी स्वागत है। सादर!

❑❑❑

**प्रेरणा-**

# मेरे प्रेरणास्रोत मोहन चोपड़े सर

चोपड़े सर का नाम लेते ही एक विलक्षण चैतन्य शरीर में पैदा होता है। कॉलिजी शिक्षा के दौरान मैं जिस हॉस्टल में रहता था, उसके वार्डन थे- चोपड़े सर। मैं उस वक्त 'शेठ नवीनचंद्र मफतलाल विद्यालय' खारेपाटण, जिला-सिंधुदुर्ग में दाखिला लिया और वहीं हॉस्टल में रहकर 1980 में पढ़ाई शुरू की। अप्पासाहेब पटवर्धन छात्रावास के बाजू में ही चोपड़े सर अपने परिवार धर्मपत्नी सुनंदा, बेटी- सुषमा और बेटे- मनोज के साथ रहते थे। कहने को उनका छोटा-सा परिवार था लेकिन मैंने जो देखा- छात्रावास में रहने वाले हर एक बच्चे को वे अपना बच्चा समझकर, उनका हर एक तरह से ख्याल रखते थे।

बात पढ़ाई की हो या स्वास्थ्य की। चोपड़े सर, सभी का बहुत ख्याल रखते थे। मानो पूरा छात्रावास ही उनका परिवार था।

चोपड़े सर- मृदुभाषी, कोमल हृदय थे। बड़े कठोर हो जाते थे- जब कोई गलती करता था। किसी से गलती हुई तो दंड पक्का समझे, बचने की कोई संभावना ना के बराबर थी। इसीलिए मुंबई में अगर कोई विद्यार्थी पढ़ाई में कमजोर है या गलत रास्ते पल चल पड़ा है तो उनके माता-पिता बच्चों को इसी छात्रावास का ही रास्ता दिखा देते थे- और चोपड़े सर की निगरानी में वे ही बच्चे अव्वल बन जाते थे।

उनके हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करने वाले कई विद्यार्थी अच्छे-अच्छे पदों पर काम कर रहे हैं। कुछ बड़े बिजनेसमैन हैं- हरीश केलकर, प्रकाश जाधव, प्रकाश पवार, सुधाकर पवार, प्रकाश चव्हाण, डॉ. सुरेश पवार, डॉ. अशोक काम्बले, विजय गुरव, प्रमोद पवार, रविन्द्र नादकर, नारायण पवार, अशोक केलकर, मधुकर शिरकर, शशिकांत प्रभुलकर, रामदास मोंडकर, प्रदीप पवार जैसे कई अन्य विद्यार्थी हैं।

13 दिसंबर 2024 को आयोजित पुण्यतिथि पर 'आसरा मुक्तांगन' परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

**- मोहन शिरकर**

मुंशी प्रेमचंद

**आलू खाकर**
**दोनों ने पानी पिया**
**और वहीं अलाव के सामने**
**अपनी धोतियाँ ओढ़कर**
**पाँव पेट में डाले सो रहे।**
**जैसे दो बड़े-बड़े**
**अजगर गेंडुलियाँ**
**मारे पड़े हों।**
**और**
**बुधिया अभी तक**
**कराह रही थी।**

# कफन

## (1)

झोंपड़े के द्वार पर बाप और बेटा दोनों एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए थे और अंदर बेटे की जवान बीवी बुधिया प्रसव-वेदना में पछाड़ खा रही थी। रह-रहकर उसके मुँह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज निकलती थी, कि दोनों कलेजा थाम लेते थे। जाड़ों की रात थी, प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई, सारा गाँव अंधकार में लय हो गया था। घीसू ने कहा- "मालूम होता है, बचेगी नहीं। सारा दिन दौड़ते हो गया, जा देख तो आ।"

माधव चिढ़कर बोला- "मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती? देखकर क्या करूँ?"

"तू बड़ा बेदर्द है बे! साल-भर जिसके साथ सुख-चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई!"

"तो मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ-पाँव पटकना नहीं देखा जाता।"

चमारों का कुनबा था और सारे गाँव में बदनाम। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता। माधव इतना कामचोर था कि आध घंटे काम करता तो घंटे भर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। घर

में मुठ्ठी-भर भी अनाज मौजूद हो, तो उनके लिए काम करने की कसम थी। जब दो-चार फाक़े हो जाते तो घीसू पेड़ पर चढ़कर लकड़ियाँ तोड़ लाता और माधव बाजार से बेच लाता और जब तक वह पैसे रहते, दोनों इधर-उधर मारे-मारे फिरते। गाँव में काम की कमी न थी। किसानों का गाँव था, मेहनती आदमी के लिए पचास काम थे। मगर इन दोनों को उसी वक़्त बुलाते, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी संतोष कर लेने के सिवा और कोई चारा न होता। अगर दोनो साधु होते, तो उन्हें संतोष और धैर्य के लिए, संयम और नियम की बिलकुल जरूरत न होती। यह तो इनकी प्रकृति थी। विचित्र जीवन था इनका! घर में मिट्टी के दो-चार

बर्तन के सिवा कोई संपत्ति नहीं। फटे चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढाँके हुए जिए जाते थे। संसार की चिंताओं से मुक्त! क़र्ज से लदे हुए। गालियाँ भी खाते, मार भी खाते, मगर कोई गम नहीं। दीन इतने कि वसूली की बिलकुल आशा न रहने पर भी लोग इन्हें कुछ-न-कुछ कर्ज दे देते थे। मटर, आलू की फसल में दूसरों के खेतों से मटर या आलू उखाड़ लाते और भून-भानकर खा लेते या दस-पाँच ऊख उखाड़ लाते और रात को चूसते। घीसू ने इसी आकाश-वृत्ति से साठ साल की उम्र काट दी और माधव भी सपूत बेटे की तरह बाप ही के पद-चिह्नों पर चल रहा था, बल्कि उसका नाम और भी उजागर कर रहा था। इस वक़्त भी दोनों अलाव के सामने बैठकर आलू भून रहे थे, जो कि किसी खेत से खोद लाए थे। घीसू की स्त्री का तो बहुत दिन हुए, देहांत हो गया था। माधव का ब्याह पिछले साल हुआ था। जब से यह औरत आई थी, उसने इस खानदान में व्यवस्था की नींव डाली थी और इन दोनों बे-गैरतों का दोजख भरती रहती थी। जब से वह आई, यह दोनों और भी आलसी और आरामतलब हो गए थे। बल्कि कुछ अकड़ने भी लगे थे। कोई कार्य करने को बुलाता, तो निर्ब्याज भाव से दुगुनी मजदूरी माँगते। वही औरत आज प्रसव-वेदना से मर रही थी और यह दोनों इसी इंतजार में थे कि वह मर जाए, तो आराम से सोएँ।

घीसू ने आलू निकालकर छीलते हुए कहा- "जाकर देख तो, क्या दशा है उसकी? चुड़ैल का फिसाद होगा, और क्या? यहाँ तो ओझा भी एक रुपया माँगता है!"

माधव को भय था, कि वह कोठरी में गया, तो घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ कर देगा। बोला- "मुझे वहाँ जाते डर लगता है।"

"डर किस बात का है, मैं तो यहाँ हूँ ही।"

"तो तुम्हीं जाकर देखो न?"

"मेरी औरत जब मरी थी, तो मैं तीन दिन तक उसके पास से हिला तक नहीं था! और फिर मुझसे लजाएगी कि नहीं? जिसका कभी मुँह नहीं देखा, आज उसका उघड़ा हुआ बदन देखूँ! उसे तन की सुध भी तो न होगी? मुझे देख लेगी तो खुलकर हाथ-पाँव भी न पटक सकेगी!"

"मैं सोचता हूँ कोई बाल-बच्चा हो गया तो क्या होगा? सोंठ, गुड़, तेल, कुछ भी तो नहीं है घर में!"

"सब कुछ आ जाएगा। भगवान दें तो! जो लोग अभी एक पैसा नहीं दे रहे हैं, वे ही कल बुलाकर रुपए देंगे। मेरे नौ लड़के हुए, घर में कभी कुछ न था, मगर भगवान ने किसी-न-किसी तरह बेड़ा पार ही लगाया।"

जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी, और किसानों के मुक़ाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे, घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था और किसानों के विचार-शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मंडली में जा मिला था। हाँ, उसमें यह शक्ति न थी, कि बैठकबाजों के नियम और नीति का पालन करता। इसलिए जहाँ उसकी मंडली के और लोग गाँव के सरगना और मुखिया बने हुए थे, उस पर सारा गाँव उँगली उठाता था। फिर भी उसे यह तसकीन तो थी ही कि अगर वह फटेहाल है तो कम-से-कम उसे किसानों की-सी जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती, और उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेजा फायदा तो नहीं उठाते!

दोनों आलू निकाल-निकालकर जलते-जलते खाने लगे। कल से कुछ नहीं खाया था। इतना सब्र न था कि ठंडा हो जाने दें। कई बार दोनों की जबानें जल गईं। छिल जाने पर आलू का बाहरी हिस्सा जबान, हलक और तालू को जला देता था और उस अंगारे को मुँह में रखने से ज्यादा खैरियत इसी में थी कि वह अंदर पहुँच जाए। वहाँ उसे ठंडा करने के लिए काफी सामान थे। इसलिए दोनों जल्द-जल्द निगल जाते। हालाँकि इस कोशिश में उनकी आँखों से आँसू आते।

घीसू को उस वक्त ठाकुर की बरात याद आई, जिसमें बीस साल पहले वह गया था। उस दावत में उसे जो तृप्ति मिली थी, वह उसके जीवन में एक याद रखने लायक बात थी, और आज भी उसकी याद ताजा थी, बोला- "वह भोज नहीं भूलता। तब से फिर उस तरह का खाना और भरपेट नहीं मिला। लड़की वालों ने सबको भर पेट पूरियाँ खिलाई थीं, सबको! छोटे-बड़े सबने पूरियाँ खाईं और असली घी की! चटनी, रायता, तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी,

दही, चटनी, मिठाई, अब क्या बताऊँ कि उस भोज में क्या स्वाद मिला। कोई रोक-टोक नहीं थी, जो चीज चाहो, माँगो, जितना चाहो खाओ। लोगों ने ऐसा खाया, ऐसा खाया, कि किसी से पानी न पिया गया। मगर परोसने वाले हैं कि पत्तल में गर्म-गर्म, गोल-गोल सुवासित कचौरियाँ डाल देते हैं। मना करते हैं कि नहीं चाहिए, पत्तल पर हाथ रोके हुए हैं, मगर वह हैं कि दिए जाते हैं। और जब सबने मुँह धो लिया, तो पान-इलायची भी मिली। मगर मुझे पान लेने की कहाँ सुध थी? खड़ा हुआ न जाता था। चटपट जाकर अपने कंबल पर लेट गया। ऐसा दिल-दरियाव था वह ठाकुर!"

माधव ने इन पदार्थों का मन-ही-मन मजा लेते हुए कहा- "अब हमें कोई ऐसा भोज नहीं खिलाता।"

"अब कोई क्या खिलाएगा? वह जमाना दूसरा था। अब तो सबको किफायत सूझती है। शादी-ब्याह में मत ख़र्च करो, क्रिया-कर्म में मत ख़र्च करो। पूछो, गरीबों का माल बटोर-बटोरकर कहाँ रखोगे? बटोरने में तो कमी नहीं है। हाँ, ख़र्च में किफायत सूझती है!"

"तुमने एक बीस पूरियाँ खाई होंगी?"

"बीस से जियादा खाई थीं!"

"मैं पचास खा जाता!"

"पचास से कम मैंने न खाई होंगी। अच्छा पका था। तू तो मेरा आधा भी नहीं है।"

आलू खाकर दोनों ने पानी पिया और वहीं अलाव के सामने अपनी धोतियाँ ओढ़कर पाँव पेट में डाले सो रहे। जैसे दो बड़े-बड़े अजगर गेंडुलियाँ मारे पड़े हों। और बुधिया अभी तक कराह रही थी।

## (2)

सवेरे माधव ने कोठरी में जाकर देखा, तो उसकी स्त्री ठंडी हो गई थी। उसके मुँह पर मक्खियाँ भिनक रही थीं। पथराई हुई आँखें ऊपर टँगी हुई थीं। सारी देह धूल से लथपथ हो रही थी। उसके पेट में बच्चा मर गया था।

माधव भागा हुआ घीसू के पास आया। फिर दोनों जोर-जोर से हाय-हाय करने और छाती पीटने लगे। पड़ोस वालों ने यह रोना-धोना सुना, तो दौड़े हुए आए और पुरानी मर्यादा के अनुसार इन अभागों को समझाने लगे।

मगर ज्यादा रोने-पीटने का अवसर न था। कफन की और लकड़ी की फिक्र करनी थी। घर में तो पैसा इस तरह गायब था, जैसे चील के घोंसले में माँस?

बाप-बेटे रोते हुए गाँव के जमींदार के पास गए। वह इन दोनों की सूरत से नफरत करते थे। कई बार इन्हें अपने हाथों से पीट चुके थे। चोरी करने के लिए, वादे पर काम पर न आने के लिए। पूछा- "क्या है बे घिसुआ, रोता क्यों है? अब तो तू कहीं दिखलाई भी नहीं देता! मालूम होता है, इस गाँव में रहना नहीं चाहता।"

घीसू ने जमीन पर सिर रखकर आँखों में आँसू भरे हुए कहा- "सरकार! बड़ी विपत्ति में हूँ। माधव की घरवाली रात को गुजर गई। रात-भर तड़पती रही सरकार! हम दोनों उसके सिरहाने बैठे रहे। दवा-दारू जो कुछ हो सका, सब कुछ किया, मुदा वह हमें दगा दे गई। अब कोई एक रोटी देने वाला भी न रहा मालिक! तबाह हो गए। घर उजड़ गया। आपका गुलाम हूँ, अब आपके सिवा कौन उसकी मिट्टी पार लगाएगा। हमारे हाथ में तो जो कुछ था, वह सब तो दवा-दारू में उठ गया। सरकार ही की दया होगी, तो उसकी मिट्टी उठेगी। आपके सिवा किसके द्वार पर जाऊँ।"

जमींदार साहब दयालु थे। मगर घीसू पर दया करना काले कंबल पर रंग चढ़ाना था। जी में तो आया, कह दें, चल, दूर हो यहाँ से। यूँ तो बुलाने से भी नहीं आता, आज जब गरज पड़ी तो आकर खुशामद कर रहा है। हरामखोर कहीं का, बदमाश! लेकिन यह क्रोध या दंड देने का अवसर न था।

जी में कुढ़ते हुए दो रुपए निकालकर फेंक दिए। मगर सांत्वना का एक शब्द भी मुँह से न निकला। उसकी तरफ ताका तक नहीं। जैसे सिर का बोझ उतारा हो।

जब जमींदार साहब ने दो रुपए दिए, तो गाँव के बनिए-महाजनों को इनकार का साहस कैसे होता? घीसू जमींदार के नाम का ढिंढोरा भी पीटना खूब जानता था। किसी ने दो आने दिए, किसी ने चारे आने। एक घंटे में घीसू के पास पाँच रुपए की अच्छी रकम जमा हो गई। कहीं से अनाज मिल गया, कहीं से लकड़ी। और दोपहर को घीसू और माधव बाजार से कफन लाने चले। इधर लोग बाँस-वाँस काटने लगे।

गाँव की नर्म दिल स्त्रियाँ आ-आकर लाश देखती थीं और उसकी बेकसी पर दो बूँद आँसू गिराकर चली जाती थीं।

## (3)

बाजार में पहुँचकर घीसू बोला- "लकड़ी तो उसे जलाने-भर को मिल गई है, क्यों माधव!"

माधव बोला- "हाँ, लकड़ी तो बहुत है, अब कफन चाहिए।"

"तो चलो, कोई हलक़ा-सा कफन ले लें।"

"हाँ, और क्या! लाश उठते-उठते रात हो जाएगी। रात को कफन कौन देखता है?"

"कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफन चाहिए।"

"कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है।"

"और क्या रखा रहता है? यही पाँच रुपए पहले मिलते, तो कुछ दवा-दारू कर लेते।"

दोनों एक-दूसरे के मन की बात ताड़ रहे थे। बाजार में इधर-उधर घूमते रहे। कभी इस बाजार की दूकान पर गए, कभी उसकी दूकान पर! तरह-तरह के कपड़े, रेशमी और सूती देखे, मगर कुछ जँचा नहीं। यहाँ तक कि शाम हो गई। तब दोनों न जाने किस दैवी प्रेरणा से एक मधुशाला के सामने जा पहुँचे। और जैसे किसी पूर्व निश्चित व्यवस्था से अंदर चले गए। वहाँ जरा देर तक दोनों असमंजस में खड़े रहे। फिर घीसू ने गद्दी के सामने जाकर कहा- "साहूजी, एक बोतल हमें भी देना।"

इसके बाद कुछ चिखौना आया, तली हुई मछली आई और दोनों बरामदे में बैठकर शांतिपूर्वक पीने लगे।

कई कुज्जियाँ ताबड़तोड़ पीने के बाद दोनों सरूर में आ गए। घीसू बोला- "कफन लगाने से क्या मिलता? आखिर जल ही तो जाता। कुछ बहू के साथ तो न जाता।"

माधव आसमान की तरफ देखकर बोला, मानों देवताओं को अपनी निष्पापता का साक्षी बना रहा हो- "दुनिया का दस्तूर है, नहीं लोग बामनों को हजारों रुपए क्यों दे देते हैं? कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं!"

"बड़े आदमियों के पास धन है, फूँके। हमारे पास फूँकने को क्या है?"

"लेकिन लोगों को जवाब क्या दोगे? लोग पूछेंगे नहीं, कफन कहाँ है?"

घीसू हँसा- "अबे, कह देंगे कि रुपए कमर से खिसक गए। बहुत ढूँढ़ा, मिले नहीं। लोगों को विश्वास न आएगा, लेकिन फिर वही रुपए देंगे।"

माधव भी हँसा, इस अनपेक्षित सौभाग्य पर बोला- "बड़ी अच्छी थी बेचारी! मरी तो खूब खिला-पिलाकर!"

आधी बोतल से ज्यादा उड़ गई। घीसू ने दो सेर पूरियाँ मँगाई। चटनी, अचार, कलेजियाँ। शराबखाने के सामने ही दूकान थी। माधव लपककर दो पत्तलों में सारे सामान ले आया। पूरा डेढ़ रुपया खर्च हो गया। सिर्फ थोड़े से पैसे बच रहे।

दोनों इस वक्त इस शान में बैठे पूरियाँ खा रहे थे जैसे जंगल में कोई शेर अपना शिकार उड़ा रहा हो। न जवाबदेही का खौफ था, न बदनामी की फिक्र। इन भावनाओं को उन्होंने बहुत पहले ही जीत लिया था।

घीसू दार्शनिक भाव से बोला- "हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे पुन्न न होगा?"

माधव ने श्रद्धा से सिर झुकाकर तसदीक की- "जरूर से जरूर होगा। भगवान, तुम अंतर्यामी हो। उसे बैकुंठ ले जाना। हम दोनों हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं। आज जो भोजन मिला वह कभी उम्र-भर न मिला था।"

एक क्षण के बाद माधव के मन में एक शंका जागी। बोला- "क्यों दादा, हम लोग भी एक-न-एक दिन वहाँ जाएँगे ही?"

घीसू ने इस भोले-भाले सवाल का कुछ उत्तर न दिया। वह परलोक की बातें सोचकर इस आनंद में बाधा न डालना चाहता था।

"जो वहाँ वह हम लोगों से पूछे कि तुमने हमें कफन क्यों नहीं दिया तो क्या कहोगे?"

"कहेंगे तुम्हारा सिर!"

"पूछेगी तो जरूर!"

"तू कैसे जानता है कि उसे कफन न मिलेगा? तू मुझे ऐसा गधा समझता है? साठ साल क्या दुनिया में घास खोदता रहा हूँ? उसको कफन मिलेगा और बहुत अच्छा मिलेगा!"

माधव को विश्वास न आया। बोला- "कौन देगा? रुपए तो तुमने चट कर दिए। वह तो मुझसे पूछेगी। उसकी माँग में तो सेंदुर मैंने डाला था।"

"कौन देगा, बताते क्यों नहीं?"

"वही लोग देंगे, जिन्होंने अबकी दिया। हाँ, अबकी रुपए हमारे हाथ न आएँगे।"

ज्यों-ज्यों अँधेरा बढ़ता था और सितारों की चमक तेज होती थी, मधुशाला की रौनक भी बढ़ती जाती थी। कोई गाता था, कोई डींग मारता था, कोई अपने संगी के गले लिपटा जाता था। कोई अपने दोस्त के मुँह में कुल्हड़ लगाए देता था।

वहाँ के वातावरण में सुरूर था, हवा में नशा। कितने तो यहाँ आकर एक चुल्लू में मस्त हो जाते थे। शराब से ज्यादा यहाँ की हवा उन पर नशा करती थी। जीवन की बाधाएँ यहाँ खींच लाती थीं और कुछ देर के लिए यह भूल जाते थे कि वे जीते हैं या मरते हैं। या न जीते हैं, न मरते हैं।

और यह दोनों बाप-बेटे अब भी मजे ले-लेकर चुसकियाँ ले रहे थे। सबकी निगाहें इनकी ओर जमी हुई थीं। दोनों कितने भाग्य के बली हैं! पूरी बोतल बीच में है।

भरपेट खाकर माधव ने बची हुई पूरियों का पत्तल उठाकर एक भिखारी को दे दिया, जो खड़ा इनकी ओर भूखी आँखों से देख रहा था। और देने के गौरव, आनंद और उल्लास का अपने जीवन में पहली बार अनुभव किया।

घीसू ने कहा- "ले जा, खूब खा और आशीर्वाद दे! जिसकी कमाई है, वह तो मर गई। मगर तेरा आशीर्वाद उसे जरूर पहुँचेगा। रोएँ-रोएँ से आशीर्वाद दो, बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं!"

माधव ने फिर आसमान की तरफ देखकर कहा- "वह बैकुंठ में जाएगी दादा, बैकुंठ की रानी बनेगी।"

घीसू खड़ा हो गया और जैसे उल्लास की लहरों में तैरता हुआ बोला- "हाँ, बेटा बैकुंठ में जाएगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई। वह न बैकुंठ जाएगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जाएँगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं, और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं?

श्रद्धालुता का यह रंग तुरंत ही बदल गया। अस्थिरता नशे की खासियत है। दु:ख और निराशा का दौरा हुआ।

माधव बोला- "मगर दादा, बेचारी ने जिंदगी में बड़ा दुख भोगा। कितना दुख झेलकर मरी!"

वह आँखों पर हाथ रखकर रोने लगा। चीखें मार-मारकर।

घीसू ने समझाया- "क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह माया-जाल से मुक्त हो गई, जंजाल से छूट गई। बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्द माया-मोह के बंधन तोड़ दिए।"

और दोनों खड़े होकर गाने लगे-

"ठगिनी क्यों नैना झमकावे! ठगिनी!"

पियक्कड़ों की आँखें इनकी ओर लगी हुई थीं और यह दोनों अपने दिल में मस्त गाए जाते थे। फिर दोनों नाचने लगे। उछले भी, कूदे भी। गिरे भी, मटके भी। भाव भी बनाए, अभिनय भी किए। और आखिर नशे में मदमस्त होकर वहीं गिर पड़े।

❑❑❑

# भव्य शादी समारोह समाज को किस दिशा में ले जाएंगे

**मईनुदीन कोहरी**
**'नाचीज बीकानेरी'**

शादी/विवाह सभी देश दुनिया के मजहब, समाज, कुनबे, कबीलों में होते आ रहे है ये सामाजिक, धार्मिक परम्पराओं से होते हैं, इनको सार्वजनिक रूप से लड़के, लड़की को निकाह व सात फेरे की प्रक्रिया द्वारा आपसी सहमति से सादगीपूर्ण तरीके से हुआ करती थी।

लेकिन आज के शादी ब्याह समय परिस्थितियों के बदलाव से भव्य आयोजन में होने लगे है। शादी के सभी पारंपरिक रीतिरिवाज पर फिल्मी छाया का असर देखने को मिलता है, आज के दौर में शादियों का खर्च मध्यम परिवारों के लिए असहनीय-सा हो गया है फिर भी लोगों में देखा देखी की होड़म होड़ से लड़के लड़की के चयन से लेकर सगाई दस्तूर रिंग सेरेमनी इन आयोजनों ने घर से होटलों में चकाचौंध से अनावश्यक खर्च जैसे फोटो, वीडियो, खाना, डांस-संगीत साज आदि होने लगे हैं। इन आयोजनों को दोनों तरफ के लोग आज के मीडिया में उस आयोजन के चर्चे करते हैं जिस से आम लड़की के मां-बाप के ज़हन में अपनी लड़कियों की फिक्र होने लगती है।

आजकल शादी में कार्ड से लेकर शादी सम्पन्न होने तक के बड़े आयोजन-लेडीज संगीत, मेहंदी-हल्दी रस्म फिर शादी के मुख्य समारोह मैरिज गार्डन, मैरिज पैलेस, भवन आदि में अनाप शनाप खर्च किए जाते हैं, जहां सारे कार्यक्रम बॉलीवुड की तर्ज पर होते हैं जो छः से भी पार अंकों के खर्च में होने लगे हैं।

बड़े खर्च में भवन, हलवाई, शामियाना टैंट, खाने में विभिन्न व्यंजन, मल्टी डिश, मल्टी स्टाल, भवन की साज सज्जा, डेकोरेशन व फोटो वीडियो आदि सभी की एडवांस बुकिंग होती है। अनेक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद फिर दहेज विदाई तक पैसा पग-पग पर 7 अंकों तक लगता है।

एक जमाना था सगाई, मेहंदी, हल्दी रस्म घर परिवार में हो जाती थी। संगीत कार्यक्रम में पारंपरिक रीतिरिवाज के गीत संगीत, मंगल गीत घर की औरतें कर लिया करती थी। आजकल हर आयोजन में संख्या भी अनलिमिटेड होने लगी है और अनावश्यक खर्च भी बढ़ जाता है।

आम मां-बाप की चिंता, लड़की के जन्म से ही मां-बाप लड़की की शादी की तैयारी में लग जाते हैं। आजकल बुजुर्गों, पंच पंचायत से राय मस्वोरा होता नहीं हर चीज में फिजूल खर्चा होने लगा है। भोजन बफे सिस्टम में वेस्टेज ज्यादा होता है। 200 आदमी तो फिजूल में खा जाते हैं जैसे हलवाई की फौज, वेटर, साफ-सफाई, बिजली, डकोरेशन, फोटो वीडियो टीम आदि के लोग। इतना अपव्यय समाज के पढ़े लिखे लोगों को आगे बढ़कर शादी ब्याह में सादापन लाने के लिए सुधारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है अन्यथा इन आयोजनों में खेत, जमीन बेचनी पड़ती है या कर्जदार होना पड़ता है, बहुत-सी बेटियों के रिश्ते नहीं हो पाते हैं, दहेज के कारण बहुत-सी अनहोनी घटनाएं होने लगती है। आओ इस आडम्बर पूर्ण भव्य आयोजनों व फिजूल खर्च से निजात पाकर समाज में सम्मान जनक जीवन जीने के लिए सुधारात्मक कदम उठाएं। कुछ आदर्श शादियां भी वर्तमान में बिना दहेज, बिना किसी तामझाम के दोनों घर परिवार के लिमिटेड संख्या में एक रुपया नारियल में सादगी से होने लगी है, समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों व धनी परिवारों को दो कदम आगे बढ़कर पहल करनी चाहिए।

**मोहल्ला कोहरियान, बीकानेर 334001**

❑❑❑

कहानी–





# मेरे साथ तुम हो


## नीरजा हेमेन्द्र

**शिक्षा–** एम.ए., बी.एड.

**संप्रति–** शिक्षिका

**अभिरूचियां–** पठन-पाठन, लेखन, अभिनय, रंगमंच, पेन्टिंग, एवं सामाजिक गतिविधियों में रूचि।

**कहानी संग्रह–** बियाबानों के जंगल, धूप भरे दिन, लड़कियाँ डरती नही हैं, मुट्ठी भर इच्छाएँ, माटी में उगते शब्द (ग्रामीण परिवेश की कहानियाँ), जी हाँ, मैं लेखिका हूँ, अमलतास के फूल, पत्तों पर ठहरी ओस की बूँदें (प्रेम कहानियाँ) और एक दिन, नीरजा हेमेन्द्र की प्रतिनिधि कहानियाँ।

**आत्मकथा–** पथरीली पगडंडियों का सफर

**उपन्यास–** मेरे शहर का मौसम, अपने-अपने इन्द्रधनुष, उन्हीं रास्तों से गुजरते हुए, ललई भाई (एक राजनैतिक गाथा)

**कविता संग्रह–** मेघ, मानसून और मन, ढूंढ कर लाओ जिन्दगी, बारिश और भूमि, स्वप्न


'बहुत' अच्छा व बड़ा परिवार है। एक देवर, दो ननदें, साथ ही सास-ससुर हैं।' मम्मी बुआ को बता रही थीं।

अवसर मेरा विवाह तय होने से सम्बन्धित था। अभी लड़के वाले मुझे देखकर गये हैं। साथ ही अपने परिवार का परिचय और मेरे परिवार के बारे में जानकारी ले कर गये हैं।

लड़के वालों के आने की जानकारी पा कर सब कुछ सम्हालने के लिए मम्मी ने दूसरे मुहल्ले में व्याही गयीं बुआ को बुला लिया। बुआ समीप रहती हैं तो ऐसी किसी समस्या या अवसर के आने पर तुरन्त फोन कर के उन्हें बुला लिया जाता है और वो खुशी-खुशी आ भी जाती हैं। कदाचित् पीहर से मोह लड़कियों में आजीवन बनी रहती है।

माँ के साथ मिलकर बुआ ने अतिथियों के लिए कुछ विशेष व्यंजन बनवाने में सहायता की। मुझे तैयार कर बैठक में अतिथियों के सामने ले गयीं। अतिथियों में लड़के के पिता व जीजा आये थे।

कुछ प्रश्नों के उत्तर मैंने दिये। फिर पापा ने कहा अब घर में जाओ। मैं बुआ के साथ बैठक से चली आयी। पापा और अतिथि कुछ देर बैठकर बातें करते रहे। कुछ देर पश्चात् अतिथि भी उठकर चले गये।

'लड़के वाले तो इसे पसन्द कर गये हैं।' पापा ने मम्मी व बुआ से कहा जिसे मैंने अपने कक्ष से सुना।

'भईया, हमारी निवेदिता जो अच्छी है ही। उसे तो कोई भी पसन्द कर लेगा। पढ़ाई भी अच्छी की है उसने। अब आपको भी लड़के व उसके घर को देखने जाना चाहिए। लड़की का ब्याह ठोक-बजा कर अच्छे घर में करना चाहिए।' बुआ ने पापा से कहा।

'हाँ, दीदी सही कह रही हैं। वो तो हमारी लड़की देखकर चले गये हैं। हमें भी उनके लड़के को, उनका घर द्वार, परिवार के बारे में देखना-जानना चाहिए।' मम्मी ने पापा से कहा।

'भईया, देख लेना लड़का नौकरी-चाकरी वाला हो। नौकरी चाहे छोटी हो

या बड़ी, दो पैसा कमाने वाला लड़का होना चाहिए। लड़के के पास पैसा न हो तो लड़की ससुराल में रहे या कारावास में, एक ही बात हो जाती है। भैंसा गाड़ी की तरह काम को खींचना और दो रोटी खाकर पड़े रहना यही जीवन रह जाता है लड़की का।' बुआ ने बिना लाग-लपेट के अपनी बात कही।

'ये कैसी बात कर रही पार्वती (बुआ का नाम पार्वती)? जो लड़के देर से नौकरी पाते हैं वो भी तो अपने जीवन को सम्हाल ही लेते हैं।' पापा ने कहा।

'भईया, आप मुझसे समझदार भी हैं और लड़की भी आप की ही है। मेरी बात बुरी लग रही है तो मैं अब सीधे निवेदिता के विवाह में ही आऊँगी। मैंने निवेदिता के ससुराल को बुरा नहीं कहा। बस यही तो कहा है कि ठीक से देखसुन कर विवाह के लिए आप हाँ कीजिएगा।...लड़की के पिता हैं तो क्या आप लड़के वालों से दबकर रहेंगे, लड़की को भी दबा कर रखा जाएगा?' कहती हुई बुआ अपना सामान ठीक करने में लगी थीं।

'अच्छा भईया हम चल रहे हैं। हम थोड़ा बोल दिये तो कोई बात नहीं। आप जानते तो हैं दूसरे के मामले में बोलने की मेरी आदत। जब भी कोई आवश्यकता हो फोन कर दीजिएगा। हम चले आएंगे।' बुआ ने कहा और अपना छोटा-सा थैला लेकर बाहर निकल गयीं।

'अरे! विप्लव जल्दी जाओ। बुआ को रिक्शा करा दो। उनका थैला पकड़ लो।' माँ ने छोटे भाई से कहा। वो बुआ के पीछे तेजी से बाहर निकल गया।

'कोई घर में आये और कुछ दुनियादारी सिखाने की बात करे तो उससे ऐसे बोला जाता है।...हमारी लड़की है, वो हमें कुछ करने से रोक थोड़ी रही हैं। समझा रही थीं। तो गलत क्या है? हमें जो करना है वो हम करेंगे ही।...' मम्मी बड़बड़ती हुई मेहमानों के चाय-पानी वाले कप-प्लेट धोने लगीं।

पापा भी ड्राइंग रूम के दीवान पर जाकर लेट गये। ये थी मेरे विवाह की पहली रस्म। मैं अपने कमरे में कुछ देर कुर्सी पर बैठी रही, कुछ देर पश्चात् एक पुस्तक जो कि अभी आधी पढ़ी थी, पढ़ने लगी।

अगले दिन सब कुछ सामान्य रहा। मेरे विवाह की कोई बात नहीं हुई। मम्मी ने शाम को फोन करके बुआ का हाल अवश्य पूछा कि वो ठीक से घर पहुँच गयी न? चूँकि बुआ नाराज होकर गयी थी अत: मम्मी ने बुआ का मन हल्का करने के लिए फोन किया। अन्यथा मम्मी इतनी शीघ्र फोन नहीं करतीं। घर के कार्यों की व्यस्तता में रहती है।

'परसों रविवार है। सोच रहा हूँ कि शरद (फूफा जी) के साथ जा कर निवेदिता की ससुराल में जाकर सब कुछ देखभाल लूँ। पार्वती सही कह रही थी।' शाम की चाय पीने के पश्चात् पापा ने मम्मी से कहा।

'हाँ...हाँ...। तुम ठीक सोच रहे हो। वहाँ चले जाओ। घर देख लो। उनकी आर्थिक स्थिति, लड़के की कमाई आदि सब कुछ जान समझ लो।' मम्मी ने कहा।

'ठीक है। शरद को फोन कर दें। परसों सुबह निकला जाये ताकि शाम तक वापस आ जाएँ।' पापा ने कहा।

पापा ने फूफा जी को फोन कर दिया। फूफा जी ने पूछा कि वो कितने बजे बस स्टैण्ड पर पहुँच जाएँ? पापा ने सुबह का समय बता दिया। मेरे बुआ-फूफा, मम्मी पापा के किसी काम को मना नहीं करते।

रविवार को पापा सुबह छ: बजे तक घर से निकल गये। उन्होंने फूफा जी से फोन करके पूछ लिया। फूफा जी कुछ पहले ही बस स्टैण्ड पर पहुँच चुके थे। मैं सामान्य दिनों की भाँति कॉलेज गयी। कुछ देर के लिए लाइब्रेरी गयी। मन पसन्द कवि की कविता की पुस्तक पढ़ी। तीन बजे घर आ गयी।

पापा और फूफा जी अभी तक नहीं आये थे। भोजन करके मैं अपने कमरे में चली गयी। अपने ब्याह की तैयारियों की ओर से ध्यान हटाने के लिए एक कविता लिखी। कविता पढ़ने और लिखने में मेरी रूचि है। मैंने देखा छ: बज रहे हैं पापा अभी तक नहीं आये हैं। मैं पुन: कुछ लिखने लगी। सात बजे पापा और फूफा जी घर आये।

'निवेदिता, पापा और फूफा जी के लिए चाय बना दो। नाश्ता भी रसोई में रखा है, उसे प्लेट में रख कर लाओ।' मम्मी ने मुझे आवाज दी।

मैं शीघ्रता से उठी। रसोई में गयी। गैस पर चाय चढ़ाई, दूसरी ओर प्लेटों में नाश्ता रखने लगी। नाश्ते की सभी चीजें और चाय प्लेट में रख कर ड्राइंगरूम में देने गयी।

'लड़के की पढ़ाई अच्छी है। देखने भी अच्छा है।

बी.टेक. किया है। जल्दी ही नौकरी में आ जाएगा। घर भी ठीक ही है। भरापूरा परिवार है।' पापा मम्मी को बता रहे थे।

मैंने चाय की ट्रे लेकर ड्राइंगरूम में प्रवेश किया और मम्मी-पापा की बातचीत बन्द हो गयी। मैं बस इतना ही सुन पायी। मुझे अधिक सुनने की इच्छा भी नहीं थी। मम्मी-पापा जो उचित समझेंगे वो करेंगे। चाय दे कर मैं ड्राइंगरूम से बाहर आ गयी।

मैं अपने कमरे में आ गयी। फूफा जी व मम्मी-पापा ड्राइंग रूम में बैठ कर बातें कर रहे थे। कुछ देर पश्चात् फूफा जी चले गये। मम्मी-पापा भीतर आ गये।

मैंने मम्मी-पापा की ओर देखा। उनके चेहरे पर संतुष्टि के भाव थे। मुझे इस विषय में कुछ नहीं कहना था, न ही मम्मी-पापा की ओर से मेरी इच्छा पूछी गयी।

कॉलेज में जब से मैं लाइब्रेरी में जाने लगी थी। तब से मेरी रूचि साहित्य की ओर बढ़ती जा रही थी। यही कारण था कि स्नातकोत्तर में मैंने साहित्य विषय लिया।

मम्मी-पापा मेरे विवाह की बात कहाँ, कैसे और किससे कर रहे थे, उसमें मेरी रूचि नहीं थी। मैं शिक्षा और साहित्य से जुड़ रही थी। स्नात्कोत्तर का फईनल वर्ष की परीक्षाएँ थीं। घर में मेरे विवाह की तैयरियाँ चल रही थीं।

मेरा उन तैयारियों में कोई योगदान नहीं था। न ही किसी ने मुझसे कोई योगदान मांगा। मम्मी मेरी बुआ के साथ बाजार जा कर कपड़े, लत्ते, गहने, बर्तन, आदि लेकर आती। विवाह के समय पहनने के लिए लाये गये कपड़े, लहंगे, चूड़ियाँ, गहने आदि बुआ ने मुझे दिखाये। मैंने देखा। सब ठीक ही थे।

जब चीजें ले ही ली गयी थीं तो पसन्द नापसन्द का प्रश्न भी तो नहीं था। वैसे भी सब कुछ मुझे ठीक लगा। फरवरी माह प्रारम्भ होने वाला था। अगले माह मार्च में मेरी परीक्षाएँ होने वाली थी।

'सुनो, आज वहाँ से फोन आया था। लड़के के पिता कह रहे थे कि फरवरी में विवाह की कई अच्छे मुहुर्त पड़ रहे हैं। उनमें से देखसुन कर एक तिथि विवाह के लिए तय कर लिया जाये। उनका कहना था कि विवाह की सब तैयारियाँ पूरी हो ही गयी हैं।' पापा शाम को कार्यालय से आये और मम्मी से कह रहे थे।

'हाँ, ठीक है। तिथि तय कर लेते हैं। आप और बहनोई जी चले जायें और मिल बैठ कर तिथि तय कर लें। चाहें तो वो लोग ही यहाँ आ जायें और बात तय हो जाये।' मम्मी ने पापा से कहा।

मैंने उनकी बातें सुनी और मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे मेरी शिक्षा अधूरी रह जाएगी।

'पापा, मार्च में मेरे पेपर हैं। मेरी परीक्षा हो जाये तब मेरे विवाह की तिथि तय कीजिए। मैं स्नातकोत्तर तो पूरी कर लूँ।' मैंने पापा से कहा।

मम्मी पापा का चेहरा देखने लगी। पापा कुछ सोचने की मुद्रा में दिखे और अपने कमरे में चले गये। पापा के पीछे-पीछे मम्मी भी गयी।

'हाँ ठीक है, मैं कल ही फोन कर दूँगा। परीक्षा के पश्चात् विवाह की तिथि तय कर ली जाये। एक माह की बात है। निवेदिता भी खुश हो जाएगी। स्नातकोत्तर पूरी करने की उसकी इच्छा भी पूरी हो जाएगी। मैं फोन कर के उन्हें बता दूँगा।' पापा ने मम्मी से कहा।

'हाँ, बिटियाँ घर के काम तो करती ही है...पढ़ाई भी बहुत मन लगा कर करती है। उसकी सहेलियाँ आती हैं तो हमें बताती है कि निवेदिता उन सबसे अधिक नम्बरों से पास हुई है। एक महीने की बात है, वो तो यूँ ही व्यतीत हो जाएंगे।' मम्मी ने कहा।

मैं निश्चिन्त हो गयी कि परीक्षा दे सकूँगी। मेरा स्नातकोत्तर पूरा हो जाएगा।

अगले दिन मैं कॉलेज गयी...लाइब्रेरी गयी। शाम को अच्छे मूड में घर आयी। मम्मी कॉलेज की पढ़ाई आदि के बारे में पूछने लगीं।

'सब ठीक है मम्मी। चलिए रसोई का काम करा लेते हैं। तब तक पापा आ जाएंगे।' मैंने मम्मी से कहा।

'ठीक है बेटा, भोजन बना लेते हैं। कुछ ही देर में पापा भी आ जाएंगे।' मम्मी ने कहा।

'अरे ये लड़के वाले अपने आप को न जाने क्या समझते हैं?' डोरबेल बजी। पापा भीतर आये। आते ही उन्होंने कहा।

'क्या हुआ?' मम्मी चिन्तित हो गयी।

'कुछ नही। चाय बनाओ।' कह कर पापा हाथ-मुँह धोने बाशरूम में चले गये।

मम्मी चाय लेकर ड्राइंगरूम में चली गयीं।

'हुआ क्या है, जो तुम ऐसी बात कर रहे थे?' मम्मी ने पापा से पूछा।

'कह क्या रहे हैं? लड़के का बाप सीधे कह रहा है कि लड़की आप की बात नहीं मान रही? शुरू से नियंत्रण में नहीं रखा?' उसकी बात सुनकर मेरी तो जान जल गयी।

मैंने भी उनसे कह दिया कि अरे कहीं और जाओ कोई लड़की देखो। मेरी बेटी जैसी तो कहीं पाओगे नहीं। तुम्हारे जैसे विचारों वाले घर में मुझे अपनी अपनी बेटी देनी नहीं है।' कह कर मैंने फोन काट दिया।

उसके पश्चात् लड़के के पिता का फोन कई बार बजा किन्तु मैंने उठाया नही। लड़के का फोन दो बार बजा। दूसरी बार में मैंने फोन उठाया। लड़के ने कहा कि- 'पापा की बात का बुरा न मानिए। मैं जानता हूँ कि आपकी बेटी बहुत शालीन और प्रतिभाशाली है। जिसे मैं समझ रहा हूँ। विवाह मुझे करना है। इसलिए अंकल आपसे मेरा निवेदन है कि पापा की बात का बुरा न मानिए।' लड़का अपनी बात पूरी कर पाता उसके पूर्व ही फोन में पीछे से उसके पिता की आवाज आई... 'रख फोन। कुछ कमाता तो न जाने क्या करता? बाप की बात काट रहा है।' और फोन कट गया।

लड़के का फोन दुबारा नहीं आया।

'पार्वती दीदी सही कह रही थीं कि नौकरी वाला लड़का देखना। नौकरी चाहे छोटी हो या बड़ी किन्तु लड़का दो पैसे कमाने वाला ही ढूँढ़ना। दो पैसे हाथ में रहेंगे तो अपनी निर्णय लेने की क्षमता रखेगा।' मम्मी ने कहा।

'हमारी बेटी किसी बेटे से कम है क्या? वो स्वंय नौकरी करेगी और तमाम लड़के उससे विवाह की इच्छा लेकर आएंगे।' पापा ने कहा।

मैं अपने कमरे में थी और मम्मी-पापा की सभी बातों को सुना। पापा की बात सुनकर मेरे नेत्र भीग गये, यह सोच कर कि पापा को मुझ पर कितना विश्वास है। मैं उनके विश्वास को कभी नहीं तोड़ूंगी।

मेरा विवाह लगभग टूट गया था। लड़के वालों की ओर से स्पष्ट उत्तर आने से पूर्व ही मेरी स्नातकोत्तर की परीक्षा पूरी हो गयी। मैंने साहित्य विषय में ही स्नात्कोत्तर किया था।

अब मैंने कोचिंग कक्षा में प्रवेश ले लिया। पढ़ने और घर के कार्यों में मम्मी का हाथ बँटाने के अतिरिक्त मेरा कोई काम नहीं था।

'अजीब हैं ये लड़के वाले?' एक दिन शाम को कार्यालय से आते ही पापा ने मम्मी से कहा।

'लड़के के पिता का फोन आया। कह रहे थे कि लड़की विवाह के लिए मान गयी? अब तो उसकी परीक्षा भी हो गयी होगी?' पापा ने कहा।

'आपने क्या कहा?' मम्मी ने कहा।

'मैंने पूछा कि आपके लड़के की नौकरी लग गयी?'

'हाँ...हाँ...। उसकी एक प्राइवेट और अच्छी कम्पनी में नौकरी लग गयी है।' लड़के के पिता ने बच्चों की भाँति चहकते हुए कहा।

'ठीक है। मेरी बेटी मेरे नियंत्रण में है अत: उससे पूछे बिना कुछ नहीं बता सकता।' मैंने कहा और फोन रख दिया।

'ठीक कहा। निवेदिता पढ़कर नौकरी करना चाहती है। वो जो कहे वो करना है।' मम्मी ने कहा।

पापा मम्मी की बात से सहमत थे। पढ़ाई के साथ-साथ मैं नौकरियों के फार्म डाल रही थी। कुछ न कुछ लिखती भी रहती थी।

'निवेदिता की मम्मी, लड़के वाले तो बहुत परेशान कर रहे हैं। लड़के के पिता का फोन आया कई बार। आज तो लड़के का फोन आ गया। कह रहा था कि उसके पिता की बात का बुरा न मानिए। उनका स्वभाव व बोली ठीक नहीं है। शादी मुझे करनी है। मुझे आपकी बेटी पसन्द है। आपके आशीर्वाद से उसको सुख से दो रोटी खिलाने योग्य मैं हो गया हूँ।' अब बताओ मैं क्या करूँ? पापा मम्मी से कह रहे थे।

'मुझे तो लड़के वालों के रंग ढंग समझ में ही नहीं आ रहे हैं। एक बार उल्टा-सीधा बोलते हैं। फिर दूसरी बार शराफत वाली बात बोलते हैं।' मम्मी ने कहा।

'लड़का तो बहुत रिरिया रहा था। कह रहा था कि शादी करेगा तो निवेदिता से, नहीं तो करेगा ही नहीं। बताओ क्या करें?' पापा ने मम्मी से कहा।

'अब तुम समझ लो। निवेदिता से पूछ कर ही कुछ करना।' मम्मी ने कहा।

मैं मम्मी-पापा की सभी बातें सुन रही थी। इन बातों में, इन चर्चाओं में मेरे अपने कोई विचार नहीं थे। भले ही

ये सभी बातें मेरे जीवन से सम्बन्धित थीं, किन्तु मैंने सब कुछ मम्मी-पापा पर छोड़ दिया था। मैं अपनी शिक्षा, नौकरी की तलाश व लेखन में मग्न थी।

'अब प्रतिदिन लड़का फोन कर रहा है। कह रहा है कि उसके घर के सभी सदस्य इस विवाह के लिए तैयार हैं। आप लोग तिथि तय कर लीजिए। मुझे निवेदिता के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिए। दान दहेज कुछ नहीं चाहिए। अब बताओ मैं क्या करूँ।' आज भी पापा कार्यालय से घर आये तो यही कह रहे थे।

'ऐसा करो, जब कुछ समझ में न आये तो अगले अवकाश में ननद-ननदोई जी को बुला लो। उनसे इस समस्या पर बात हो जाएगी। वे उचित राय देने में सहयोग करेंगे।' मम्मी ने पापा से कहा।

'ठीक है। उनको फोन कर देंगे कि आने वाले संडे को वे दोनों आ जाएँ।' पापा ने कहा।

संडे को बुआ जी, फूफा जी के साथ आयीं। सभी लोग पापा के कमरे में बैठे थे। उनमें क्या बातें हो रही थीं मेरी जानने की इच्छा नहीं थी। मेरे माता-पिता मेरे लिए जो अच्छा होगा वो ही करेंगे।

मैं अपने कमरे में आकर लेट गयी। मन नहीं लग रहा था तो एक उपन्यास पढ़ने लगी जो कुछ दिनों पूर्व ही लाइब्रेरी से निकलवा कर लायी थी। बुआ और फूफा को मम्मी ने शाम का भोजन करा कर जाने दिया।

समय अपनी गति से चल रहा था। मैंने कुछ नौकरियों के फार्म भरे थे। उनमें से एक नौकरी का परिणाम आया जिसमें मैं सफल हो गयी थी। किन्तु मेरा साक्षात्कार शेष था जिसकी तिथि नहीं आयी थी।

'निवेदिता, वो लोग जो तुम्हें देखने आये थे। तुम तो जानती हो बेटा कि उनके व्यवहार से परेशान होकर मैंने रिश्ता तोड़ दिया था। अब लड़का नौकरी में आ गया है। बार-बार उसका फोन आ रहा है। कहता है कि विवाह करेगा तो निवेदिता से करेगा नहीं तो विवाह ही नहीं करेगा। अब तुम्हीं बताओ बेटा हम उसे क्या उत्तर दें? कुछ समझ में नहीं आ रहा है?' पापा ने मुझसे पूछा।

'जैसा आप उचित समझें पापा। दो दिनों पश्चात् मेरा साक्षात्कार है और मुझे जाना है।' मैंने पापा से कहा।

'आज ही लेटर मिला है। पर्यटन विभाग के मुख्यालय में जाना है।' मैंने पापा से कहा।

मेरी बात सुनकर पापा चुपचाप वहाँ से चले गये। मैंने मम्मी के साथ रसोई में थोड़ा हाथ बँटाया। मम्मी ने कहा कि जाकर साक्षात्कार की तैयारी करो तो मैं अपने कमरे में चली गयी।

मेरे विवाह का जो भी निर्णय हुआ हो घर में मुझे उन बातों से कोई लेना देना नहीं था। बस, मुझे आजकल की ॠतु बहुत अच्छी लगने लगी थी। अक्टूबर माह प्रारम्भ हो चुका था। हल्के कोहरे की चादर ओढ़कर निकलता सवेरे का सूर्य। पर्वों की सुगन्ध से भरी हुई साँझ घने वृक्षों से हो कर शनैः-शनैः धरती पर उतरती। मैं घर की छत से ॠतुओं के बदलते रूप का आनन्द लेती। दिन का मौसम भी कम मनोरम नहीं होता।

मेरे घर की छत से दिखाई देते कुछ बचे-खुचे खेतों की मेडों पर लहराते कांस के असंख्य उजले गुच्छे ऐसे प्रतीत होते जैसे मानों धरती पर नहीं आसमान में श्वेत बादलों में हरी दूब के साथ उड़ रहे हैं। घर की छत पर लगे रंग-बिरंगे पुष्पों, पत्तियों पर भोर में श्वेत ओस की बूँदें मोतियों की भाँति

चमकतीं। हल्की धूप की किरणों की चमक आते ही वे छुप जातीं, पुन: अगले दिन की भोर में आने के लिए।

कुछ वर्ष पूर्व इन स्थानों पर खेत ही खेत ही थे। अब तो खेत समाप्त होते जा रहे हैं और इन स्थानों पर घर बनते जा रहे हैं। फिर भी कुछ प्राकृतिक सौन्दर्य शेष है, जिसे देख कर हृदय पुलकित हो जाता है।

युवा विद्यार्थी दिनों के ऐसे ही मनोरम क्षणों में मेरे दिन व्यतीत हो रहे थे। मैं अपना अधिकांश समय और ध्यान पढ़ाई पर दे रही थी।

'वार्षिक परीक्षा का परिणाम आने के पश्चात् निवेदिता के विवाह की तिथि तय करनी होगी। लड़का कह रहा है कि वो निवेदिता को खुश रखेगा। आज ही लड़के का फोन आया है।' पापा मम्मी से कह रहे थे।

'उसके माता-पिता निवेदिता के साथ कहीं बुरा व्यवहार करें तब हम क्या करेंगे?' मम्मी ने चिन्तित होते हुए पूछा।

'लड़के से मैंने पूछा तो वो कह रहा था कि निवेदिता को किसी प्रकार से परेशानी हुई तो उसे लेकर वो अलग रहने चला जाएगा। वह यह भी बता रहा था कि इस समय उसके माता-पिता सभी निवेदिता से विवाह करने के लिए तैयार हैं।' पापा ने कहा।

अप्रैल में मेरा विवाह हो गया। मैं परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी थी। नौकरी का एक साक्षात्कार भी दे चुकी थी। जिनका परिणाम आना शेष था। ससुराल के दिन वैसे ही कट रहे थे जैसे अपनी सहेलियों से सुना था...कुछ खट्टे, कुछ मीठे।

मम्मी के घर आती तो वापस ससुराल जाने का मन नहीं होता। किन्तु वही मेरा अपना घर था। यहाँ तो सब कुछ पराया था। अत: माता-पिता को विदा करना ही होता और मुझे जाना ही होता। पाँच माह ससुराल आये हो चुके थे।

अब मैं दूसरी बार मम्मी के घर जाने वाली थी। दो दिनों पश्चात् मुझे जाना था। अवसर था भाईदूज का। मैं अपने कुछ कपड़े और आवश्यक वस्तुएँ पैक कर चुकी थी। शाम को हर्ष (मेरे पति) समय से कार्यालय से घर आ गये।

'क्या हुआ? आज कार्यालय में काम कुछ अधिक था क्या?' हर्ष का उतरा चेहरा देखकर, पानी का ग्लास पकड़ाते हुए मैंने पूछा।

'नहीं।' हर्ष ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

'तो आज चेहरा क्यों उतरा हुआ है?' मैंने कहा। क्यों कि मैंने महसूस किया कि जैसे हर्ष के चेहरे की पूरी उर्जा किसी ने निचोड़ ली है।

'तुम्हें हर समय मेरा मजाक उड़ाना अच्छा लगता है? मैके जाने की खुशी मना रही हो तो उसे ही मनाओ। मुझसे कोई बात न करो।' हर्ष ने बेरुखी से कहा।

मैं अचम्भित थी। इस प्रकार की बात तो मैं हर्ष से बहुत कम करती हूँ। आज न जाने कैसे उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर बोल दिया।

रात तक इस रहस्य से पर्दा उठ ही गया, जो हर्ष मुझसे छुपा रहा था।

'जब से बहू आयी है तब से कोई अच्छी बात घर में नहीं हुई। हठ करके इसने इस लड़की से विवाह कर लिया। आज उसकी रही-सही नौकरी भी छूट गयी।' ड्राइंगरूम में ससुर से बातें कर रहीं अपनी सास के स्वर सुनकर मैं पत्थर की भाँति जम-सी गयी।

मेरे दो दिन ससुराल में किस प्रकार कटे इसे मैं ही समझ सकती हूँ। हर्ष ने मुझसे एक-दो शब्दों...हाँ...हूँ...के अतिरिक्त कोई बात नहीं की।

'तैयार हो जाओ। तुम्हें मायके जाना है। मैं चलकर बस में बैठा दूँगा।' हर्ष ने ऐसे कहा जैसे उसकी नौकरी मेरे कारण चली गयी।

'तुम मेरे साथ नहीं चलोगे?' मैंने पूछा।

'नहीं, और हाँ, जब जी चाहे आ जाना। अधिक दिन रूक जाओगी तो भी कोई बुरा नहीं मानेगा।' हर्ष ने कहा।

मैं अपनी स्थिति समझ गयी। हर्ष मुझे बस में बैठा कर घर चला आया। भरी मन से मैं माँ के घर पहुँची।

'बेटी, तुम अकेले आ गयी। दामाद जी साथ नहीं आये?' मम्मी ने मेरा बैग अन्दर कमरे में रखते हुए पूछा।

माँ के प्रश्न का कोई उत्तर मैंने नहीं दिया।

'निवेदिता, हाथ-मुँह धोकर भोजन कर लो बेटा। तत्पश्चात् थोड़ा आराम कर लो।...और हाँ दो दिन पूर्व तुम्हारा एक लिफाफा आया है। मैंने सोचा कि भईयादूज में आओगी तो ले लोगी। इसलिए भेजा नहीं।' कह कर मम्मी ने एक भूरे रंग का बन्द लिफाफा मेरे हाथों में पकड़ा दिया।

निराश मन से मैंने लिफाफा पकड़ लिया। सोचा किसी परीक्षा का बुलावा होगा। लिफाफा खोल कर देखा तो सहसा विश्वास नहीं हुआ...मेरी नौकरी का नियुक्ति पत्र था।

'क्या है बेटा?' मेरे चेहरे के बदलते भावों को देखकर मम्मी खुश लग रही थीं।

'मम्मी, भूख लग रही है। पहले भोजन कर लूँ फिर बताती हूँ।' मम्मी से कह कर मैं हाथ धोने वाशबेसिन की ओर बढ़ गयी।

मैंने सोचा कि पहले अपने आँचल में खुशियों को भर तो लूँ? ससुराल से बाहर दूसरे शहर में जाकर नौकरी करने के बारे में स्वंय को दृढ़ तो कर लूँ? अपने पति की उस बात कर उत्तर तो सोच लूँ कि जब तक चाहे मायके में रहना।

और सबसे मुख्य बात यह कि मेरे ही माता-पिता द्वारा मुझे अपने पति से दब कर रहने, उसका सम्मान करना, उसकी किसी बात का उत्तर न देना तथा जैसे भी बन पड़े उसके साथ जिन्दगी निबाहना और यदि उसकी इच्छा है कि मैं नौकरी न करूँ तो मैं उसकी यह इच्छा भी मानूँ।...

...अपने माता-पिता के प्रश्नों के समुचित उत्तर ढूँढ़ने का समय यही था। ऊपर वाले की बहुत बड़ी कृपा थी मेरे सिर पर कि मम्मी ने यह पत्र मेरी ससुराल के पते पर रीपोस्ट नहीं किया।

मैं भोजन करती जा रही थी साथ ही मेरे मन में विवाह से पूर्व से लेकर अभी मम्मी के घर आने तक सभी ससुराली जनों का व्यवहार स्मरण आ रहा था। सबसे अधिक मेरे हृदय पर चोट करने वाला व्यवहार मेरे पति का था।

मैंने भोजन समाप्त किया और मम्मी के साथ उनके रूम में आ कर बैठ गयी। मम्मी मेरी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देख कर मुस्करा रही थीं।

'मम्मी, मुझे नौकरी के लिए नियुक्ति पत्र आया है।' जहाँ मेरी नौकरी लगी थी उस शहर का नाम बताते हुए मैंने मम्मी से कहा।

'ये तो बहुत प्रसन्नता की बात है। दामाद जी को सूचना दे दो। जैसी उनकी इच्छा हो वैसा करो।' मम्मी ने कहा।

'उससे क्या पूछना? पढ़ाई मैंने की, परिश्रम मैंने की। नौकरी उसकी इच्छा से करूँगी? उसकी इच्छा नहीं होगी तो नहीं करूँगी?' मैंने मम्मी से कहा।

'तुम्हें नौकरी करने को मना नहीं कर रही हूँ। बस दामाद जी से पूछने को कह रही हूँ।' मम्मी ने कहा।

'वो सब बातें छोड़ो। कल ही मैं ये नौकरी ज्वाइन करूँगी।...' मेरी बात सुनकर मम्मी मेरा मुँह ताकने लगीं।

'...मम्मी तुम उस दामाद से पूछने को कह रही हो जिसकी नौकरी छूट गयी है? नौकरी छूट गयी है तो कोई बात नहीं इन्सानित भी खत्म हो गयी है। मैं जब वहाँ से चलने लगी तो कहने लगा कि जितने दिन चाहो माँ-बाप के घर रहना।' मुझे बस में बैठा कर चला गया। यहाँ तक पहुँचाने भी नहीं आया। कहो तो पूछ लूँ? मुझे नौकरी करनी है या नहीं? कहकर मैंने मम्मी की ओर देखा।

मेरी बात सुनकर मम्मी के चेहरे की पूरी प्रसन्नता ऐसे उड़ी जैसे जीवन में कभी मुस्कराईं न हो?

अगले दिन पापा के साथ जाकर मैंने नौकरी ज्वाइन कर ली।

'बेटा, तुम आराम से चिन्तारहित हो कर नौकरी करो। किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं है। तुम खुश रहो। अपने परिश्रम से तुमने जो कुछ हासिल किया है उसकी खुशियाँ मनाओ।' पापा मेरे साथ बस में बैठे थे और मुझे समझा रहे थे। कदाचित् मम्मी ने उन्हें सारी बातें बता दी थीं।

पापा की बातें मैं सुन रही थी। अब मुझे समझ में आया कि महिलाओं की आत्मनिर्भरता को क्यों इतना महत्व दिया जा रहा है? मैं आधे घंटे का सफर बस से तय करने के पश्चात् कार्यालय में थी।

'शाम को तुम्हें लेने आ जाएँ बेटा?' पापा ने पूछा।

'नहीं पापा, मैं आ जाऊँगी। मैं आपकी बड़ी बेटी हूँ और मुझे बड़ों का तरह रहना होगा। जहाँ आपके सहारे की आवश्यकता होगी वहाँ मैं आगे बढ़कर सहारा मांगूगी।' मैंने पापा से कहा।

पापा मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगे। उनके चेहरे पर गर्व के भाव थे।

ज्वाइनिंग करने के पश्चात् मैं नियमित रूप से कार्यालय जाने लगी। दो सप्ताह व्यतीत हो गये। ससुराल से किसी का फोन नहीं आया। मेरे पति ने कभी हाल नहीं पूछा।

सहसा एक दिन मेरे पिता के पास मेरे ससुर का फोन आया।...उन्हें बहुत शिकायत थी कि बहू को नौकरी करा रहे

हैं और उन्हें बताया नही। वे यह भी कह रहे थे कि बहू के वेतन के बारे में भी कोई जानकारी हम लोगों ने उन्हें नहीं दी...आदि...आदि...।

'पापा, आप उनसे स्पष्ट कह दीजिए कि मुझे उनसे अब कोई रिश्ता नहीं रखना। इन्सान को परखने के लिए पूरी उम्र बरबाद करने की आवश्यकता मैं नहीं समझती।' मैंने पापा से कहा।

'तुम्हारी बात सत्य है। हम सब तुमसे सहमत हैं किन्तु लड़के ने तो कुछ नहीं कहा।' पापा ने मुझे ससुराल वालों के पक्ष में समझाना चाहा।

'पापा, मैं बार-बार कह रही हूँ। उसकी नौकरी छूटने से मुझे समस्या नहीं है। आपका दामाद मुझे समझा सकता था। मैं उसकी विवशता समझती। उसका साथ देती। किन्तु उसकी बातों से प्रतीत हो रहा था कि इन स्थितियों की उत्तरदायी मैं हूँ। मैं ऐसे आदमी के साथ जीवन बरबाद नहीं कर सकती, जिसने विवाह के पहले कहा था कि बुरे समय में वो मेरे साथ रहेगा।...वो साथ क्या रहेगा जो स्टेशन पर छोड़ कर मुझे चला गया?...मेरा मूल्यांकन मेरी नौकरी और सैलरी देख कर लगाएंगे? मैं बिकाऊ नहीं हूँ पापा। अच्छा या बुरा जैसे भी हो मैं अपना जीवन सम्हाल लूँगी। एक बार मैंने आप सबकी बात कर विवाह कर लिया था। अब प्लीज पापा आप मेरी बात मान लीजिए। मुझे भी थोड़ा जी लेने दीजिए।' मैंने पापा से कहा मम्मी भी वही थीं।

मेरी बात सुनकर पापा खामोश हो गये। मम्मी रोने लगी।

'हमने अपनी बेटी को किस मुसीबत में ढकेल दिया। विवाह के लिए उसने कुछ नहीं कहा तो हमने भी उसकी इच्छा नहीं पूछी। इतनी प्रतिभाशाली बेटी को हमने किन असभ्य लोगों के हाथों में सौंप दिया।' कहते-कहते मम्मी रोती भी जा रही थीं।

'रोओ नहीं मम्मी, उनके कारण तुम्हारी बेटी का साहस कम नहीं हुआ है। मैं ठीक हूँ। अब मुझे कुछ खाने को दे दो। भूख लग रही है। सुबह समय से कार्यालय जाना है।' मैंने मम्मी से कहा।

भोजन के बाद मैं कमरे में गई। कुछ देर बैठ कर सोचती रही। फिर मैंने डायरी निकाली। आज बहुत दिनों बाद कुछ लिखने की इच्छा हो रही थी। मैंने एक कविता लिखी।

विवाह के पश्चात् जो साहस ससुराल में टूटा है, जिस पीड़ा से मेरा हृदय इस समय पूरी तरह डूबा है, वो सब कुछ मैं अपनी लेखनी में उतार देना चाहती हूँ।

मैंने मम्मी से कहा है कि मैं साहसी हूँ, तो अब मुझे साहसी बन कर दिखाना है। मैंने अपनी डायरी और पेन की ओर देखा और मन ही मन कहा कि कोई और हो न हो तुम मेरे साथ हो। हो न?

अपनी भावनाएँ पन्नों पर उतारने लगी। मन हल्का हो गया। मैंने डायरी और पेन मेज पर रख कर दीवार पर लगी घड़ी की ओर देखा। मेरे निद्रामग्न होने का समय हो रहा था। अगली प्रातः समय पर उठ कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना था।

**'नीरजालय' 510/75, न्यू हैदराबाद,**
**लखनऊ-226007, उ.प्र.**

❑❑❑

**क्या आप 'आसरा मुक्तांगन' के परिवार में शामिल होना चाहते हैं?**

'आसरा मुक्तांगन' की सदस्यता स्वीकार कर आप इस परिवार के सदस्य बन सकते हैं। भारत और नेपाल हेतु सदस्यता दरें-

| | | | |
|---|---|---|---|
| एक प्रतिः | 30/- | वार्षिक सदस्यताः | 350/- |
| त्रैवार्षिक सदस्यताः | 1000/- | आजीवन सदस्यताः | 6000/- |

मानद संरक्षणः 1,00,000/-

(डाक/कूरियर 'आसरा मुक्तांगन' द्वारा वहन किया जाएगा)
(चेक ड्राफ्ट 'आसरा मुक्तांगन' के नाम से ही देय होंगे)
बैंक का नाम- Bank of India (Mumbai)
**Ac No. : 030120110000055**
**IFSC : BKID0000301**

**'आसरा मुक्तांगन'**
**पोस्ट बैग नं.-1, कलवा ठाणे-400605 (महाराष्ट्र)**
**Email : aasaramuktangan@gmail.com**
**Mobile : 8108400605 / 9029784346**

# क्रिसमस का वास्तविक चरितार्थता सेवाभाव में ही है

सीताराम गुप्ता

**(यदि हम भी ईसा मसीह की तरह सेवा को जीवन में सर्वोपरि स्थान देने लगें तो क्रिसमस का उल्लास कई गुना बढ़ जाए)**

अरविंद आश्रम की श्रीमाँ ने कहा है- 'अडोर एंड वाट यू अडोर अटैम्प्ट टू बी'। पूजा कीजिए और जिसकी पूजा करो वही होने का प्रयास करो। अत्यंत सारगर्भित बात है। पूजा वास्तव में व्यक्ति की नहीं गुणों की ही होनी चाहिए। पूजा करने का अर्थ ही है आराध्य के गुणों को अपनाने का संकल्प। संसार में जितने भी महापुरुष अथवा धर्मप्रवर्तक हुए हैं सभी उदात्त गुणों से ओतप्रोत हुए हैं। इसी से उनकी पूजा करते हैं और उनके जीवन की विभिन्न घटनाओं व उनके जन्मदिन को उत्सव के रूप में मनाते हैं और वही दोहराने का प्रयास करते हैं जो उन्होंने स्वयं किया था। हम न केवल अपने धर्म के महापुरुषों व प्रवर्तकों के साथ ऐसा करते हैं, अपितु सभी धर्मों के महापुरुषों व प्रवर्तकों का सम्मान करते हुए उनके धर्म के उत्सवों और आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। ऐसा ही एक उत्सव है क्रिसमस अथवा बड़ा दिन जो ईसा मसीह के जन्मदिन के रुप में मनाया जाता है।

क्रिसमस का पर्व ईसाईयों के साथ सभी धर्मों के लोग मिल-जुलकर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। प्रयास होता है कि संपूर्ण संसार उल्लासमय हो जाए। लेकिन क्यों? कारण स्पष्ट है। ईसा मसीह भी तो यही चाहते थे। अन्य महापुरुषों की तरह उनका जन्म भी लोगों के दुख-दर्द दूर करके उन्हें नेक राह पर चलाने के लिए ही तो हुआ था। उनका सारा जीवन गरीबों, रोगियो व पीड़ित लोगों की सेवा करते बीता। वे दया और विनम्रता की मूर्ति थे। उनका कहना था कि पापी से नहीं पाप से घृणा करो। वे बड़े से बड़े अपराध के लिए क्षमा की वकालत करते थे। क्षमाभाव उनमें इतना अधिक था कि स्वयं को सूली पर लटकाने वालों को भी क्षमा कर दिया। उन्होंने कहा कि हे परमपिता! इन्हें क्षमा कर दो क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं। इसी भावना से हर साल ये पर्व मनाया जाता है।

क्रिसमस बच्चों का तो अत्यंत प्रिय उत्सव है। केक किसको पसंद नहीं? उपहारों का लेनदेन किसे प्रसन्नता नहीं देता? और क्रिसमस केक और उपहारों के आदान-प्रदान के बिना कैसे मन सकता है? सैंटा क्लॉज का नाम लेते ही बच्चों के मुख की प्रसन्नता कई गुना बढ़ जाती है। हर बच्चा क्रिसमस ट्री सजाने में अपार हर्ष का अनुभव करता है। बच्चे तो बच्चे बड़े भी कहाँ पीछे रहते हैं? सभी बच्चे ही तो बन जाते हैं। उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता

कि यह किस मजहब का त्योहार है। उन्हें तो बस क्रिएटिविटी चाहिए, धूम-धड़ाका और खाने-पीने की नई-नई चीजें चाहिए। चारों तरफ चहल-पहल हो, खाने के लिए स्वादिष्ट व्यंजन हों, उल्लास का परिवेश हो और काम से फुर्सत मिल जाए इसके अतिरिक्त और क्या चाहिए आदमी को खुश होने के लिए? क्रिसमस का आयोजन उसे यह सब उपलब्ध करवाता है।

क्रिसमस विशेष रूप से उल्लास का पर्व है। अब क्रिसमस हो या अन्य कोई त्योहार सभी हमें आनंद प्रदान करते हैं। त्योहार मनाने से आनंद की अनुभूति होती है। आनंद की अवस्था में हमारे शरीर में तनाव कम करने वाले तथा शरीर में रोग अवरोधक क्षमता उत्पन्न करने वाले हार्मोंस या रसायन उत्सर्जित होते हैं, जो हमें स्वस्थ बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं। इस प्रकार त्योहारों के आयोजन का सीधा संबंध हमारे उत्तम स्वास्थ्य तथा रोगमुक्ति से है। हर त्योहार का उद्देश्य होता है मनुष्य को खुशी प्रदान करना। धर्म व आध्यात्मिकता के विकास के साथ-साथ क्रिसमस हमें अपार खुशी प्रदान कर हमें तनावमुक्त करके स्वस्थ व प्रसन्न बनाए रखने का ही एक उपक्रम है, इसमें संदेह नहीं।

त्योहार का शाब्दिक अर्थ भी खुशी ही है। मुस्लिम या पारसी त्योहारों के नाम से पहले एक शब्द जुड़ा होता है 'ईद' जैसे ईदुलफित्र, ईदुज्जुहा, ईदे-मीलादुन्नबी, ईदे-नौरोजा आदि। इनका शाब्दिक अर्थ हुआ फित्र की खुशी, कुर्बानी या समर्पण की खुशी, नबी के जन्मदिन की खुशी तथा नए दिन की खुशी। जिस प्रकार 'ईद' शब्द खुशी या प्रसन्नता या पर्व का पर्यायवाची है उसी प्रकार त्योहार, पर्व या उत्सव भी खुशी के ही पर्यायवाची हैं। किसी भी धर्म अथवा समुदाय के तीज-त्योहार या पर्व हों हमें खुशी प्रदान करते हैं। जब हम खुद कोई त्योहार मनाते हैं, तब तो आनन्द की अनुभूति होती ही है साथ ही दूसरों को त्योहार मनाते देख भी कम आनन्दानुभूति नहीं होती। यही कारण है कि आज अनेक उत्सव, तीज-त्योहार और मेले-ठेले पर्यटन से जुड़ते जा रहे हैं। ब्रज की होली देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं, तो भारत में होली और दूसरे पर्वों का आनंद उठाने के लिए विदेशों से अनेक पर्यटक त्योहारों के दिनों में ही आते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि ये तीज-त्योहार हमें खुशी तो प्रदान करते हैं पर कैसे? त्योहारों के आयोजन और उनके मनाने के तरीकों पर नजर डालिए। त्योहारों के अवसर पर जो सबसे पहला काम किया जाता है वह है घरों की साफ-सफाई। साफ-सफाई और रंग-रोगन के बाद घरों को सजाया जाता है। रात को रोशनी की जाती है तथा आतिशबाजी भी की जाती है। हालांकि अत्यधिक प्रदूषण के कारण अब आतिशबाजी करना घातक है अत: इससे पूरी तरह से बचना चाहिए। पूजा-पाठ और विभिन्न अनुष्ठान किए जाते हैं जो पर्यावरण की शुद्धि के साथ-साथ शरीर की शुद्धि करने में भी सक्षम हैं। अनुष्ठान से पूर्व व्रत आदि भी रखे जाते हैं। इस्लाम में ईदुलफितर से पूर्व तीस रोजे रखे जाते हैं। हिंदू ही नहीं पारसी और इसाई भी रोजे या फास्ट रखते हैं। यह शरीर शुद्धि का पारंपरिक तरीका है।

शरीर शुद्धि के बाद मन की शुद्धि भी अनिवार्य है। विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान इसमें सहायक होते हैं। त्योहारों के अवसर पर दान देने की भी प्रथा है। दान की भावना व्यक्ति को प्रसन्नता प्रदान करती है। उसके अंदर सहयोग और करुणा की भावना का विकास होता है। ध्यान से देखें तो त्योहारों से जुड़ी सारी क्रियाएँ या तैयारियाँ खुशी प्रदान करती हैं तथा हमारे परिवेश और जीवन स्तर को उन्नत बनाती हैं। लेकिन क्या आज भी ये सब आयोजन या त्योहार आनन्द प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं? वस्तुत: आनंद मन का एक भाव है अत: त्योहार के मनाने का संबंध मन से होना चाहिए।

आज त्योहार मनाना बहुत जटिल कार्य हो गया है। जटिलता में आनंद कहाँ और आनंद के अभाव में शरीर में लाभदायक रसायनों का उत्सर्जन असंभव है। शरीर में लाभदायक रसायनों के उत्सर्जन के अभाव में हम पूरी तरह से स्वस्थ नहीं रह सकते और स्वास्थ्य के अभाव में आनंद कहाँ? सच्चा आनंद तो मन की प्रसन्नता में ही है। स्वयं भी प्रसन्न रहो और दूसरों को भी प्रसन्नता प्रदान करो। त्योहारों के माध्यम से ये बखूबी किया जा सकता है लेकिन ये तभी संभव है जब हम आडंबररहित होकर सादगी से त्योहार मनाना सीख लें। ईसा मसीह की तरह यदि हम भी गरीबों, रोगियों व पीड़ितों की सेवा करना व हर व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाने का प्रयास करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लें तो क्रिसमस का उल्लास कई गुना बढ़ जाए। क्रिसमस का चरितार्थता तो सेवाभाव में ही निहित है।

**ए.डी.-106-सी., पीतमपुरा, दिल्ली-110034**

❑❑❑

# 'भारतीय सीमाशुल्क के कोहिनूर' महानायक जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे

**जमादार बापू लक्ष्मण मुंबई कस्टम्स में कोई बड़े अफसर नहीं थे बल्कि एक सिपाही थे। यह सिपाही साधारण नहीं था। मुंबई के अंडरवर्ल्ड में उसके नाम का आतंक फैला हुआ था। अपनी ईमानदारी, देशभक्ति और अतुलनीय साहस को ध्यान में रखकर उन्हें दो बार राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।**

मुम्बई के इतिहास में दन्तकथा बन चुके महानायक जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे।

महानायक जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे का जन्म दिनांक 2 जुलाई 1922 को महाराष्ट्र के जुन्नर तहसील के मंगळूर-पारगांव नामक गांव में एक किसान परिवार में हुआ।

बापू के बचपन में ही प्लेग की महामारी में बापू ने पिता की छत्र छाया खो दी। बड़े भाई चिमाजी के साथ बापू अपनी संस्कारी मां के कठोर अनुशासन में बड़े हो रहे थे। जंगल में बकरियां चराते हुए, कठोर प्रकृति और गांव के वातावरण ने बापू को शारीरिक और मानसिक रूप से इतना मजबूत बना दिया कि नियति ने मानो उन्हें महान कार्यों के लिए तैयार कर लिया था।

यथावकाश बड़े भाई चीमाजी ने अपने कुटुम्ब का हाथ बटाने के लिए मुम्बई की गोदी का रास्ता चुना। वे मुम्बई पोर्ट ट्रस्ट की गोदी में मजदूर के पद पर भर्ती होकर तनतोड़ मेहनत करने लगे। अपने परिवार को सहारा देने के लिए बापू ने अपने बड़े भाई के नक्शे कदम पर चलते हुए मुंबई की गोदी का रुख किया। यहीं से उनके जीवन की दिशा बदल गई।

बापू 15 साल के होने के बाद बड़े भाई चिमाजी का साथ देने के लिए मुम्बई चले आये और मुम्बई कस्टम्स में 9 जुलाई 1937 को रुपए 7 प्रतिमाह की तनख्वाह पर बॉय के पद पर भर्ती होकर उन्होंने अपनी राह चुन ली और यहीं से बापू के जीवन ने एक ऐसा मोड़ लिया कि उनकी जीवन कहानी मुंबई के इतिहास में एक दन्तकथा बन गई। उनको मुंबई कस्टम्स के आसूचना एकक में काम करने का मौका मिला। यह 1960-1970 का वह दशक था जब तस्करी का रोग बड़े पैमाने पर पूरे देश में फैल चुका था मुम्बई की गोदी में कई संगठित टोलियां तस्करी के जरिये देश का लाखों रुपयों

का नुकसान करती थी। ऐसे में अकेला बापू इन माफिया गैंगों के सामने पहाड़ बनकर खड़ा हो गया। इन सभी माफिया सरगनाओं में अपनी ईमानदारी, दुर्दम्य साहस और कर्तव्य निष्ठा से बापू ने आतंक पैदा कर दिया था। उन्होंने अपने 41 वर्ष के सेवाकाल में लाखों रुपयों का स्मगलिंग का माल जब्त किया। जिसकी कीमत आज अरबों में होगी।

बापू को 1964 में पहला राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह कस्टम डिपार्टमेंट के लिए भी पहला पुरस्कार था। दूसरी बार 1979 में बापू को मरणोपरांत दूसरा राष्ट्रपति पुरस्कार घोषित किया गया। इस तरह सर्वप्रथम दो बार राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने का कीर्तिमान भी उनके नाम पर स्थापित है।

4 दिसम्बर 1978 में जब उनका देहांत हुआ, पूरे मुंबई ने अनेक अखबारों के जरिये इस खाकी वर्दीधारी महानायक को श्रद्धांजलि अर्पित की। आज जिस चौराहे पर न्यू कस्टम हाऊस की ऐतिहासिक इमारत खड़ी है, उस चौराहे का भारत सरकार ने जमादार बापू लक्ष्मण चौक ऐसा नामकरण करके उन्हें अनोखी श्रद्धांजलि अर्पित की। 26 जनवरी 1984 को उस वक्त महाराष्ट्र के राजकारण और समाजकारण में अत्यंत प्रभावशाली नेता रहे, श्री एस.एम. जोशी के करकमलो द्वारा उनके जन्मस्थल मंगलूर गांव में उनका ब्राँझ का पुतला स्थापित किया गया, जहां आज तक उनकी पुण्यतिथि पर सभी गांव वाले मिलकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

उनके कई चर्चित कारनामों में से एक था, 20 सितंबर 1957 को विक्टोरिया डॉक में तीन चीनी नाविकों से 300 तोला सोना जब्त करना। उन्होंने ये सोना अपने गुप्तांगों में छिपाया था। ऐसा तस्करी के इतिहास में पहली बार हुआ था। बापू ने इसे अपनी तेज नजर और अनुभव के दम पर बिना किसी मुखबिर की मदद के पकड़ लिया। इस घटना ने सिंगापुर और हांगकांग तक अपराधियों के बीच सनसनी मचा दी।

1960-1970 में देश के नामचीन स्मगलर्स और गैंगस्टर्स उनका नाम सुनते ही कांपते थे, ऐसे योद्धा थे जमादार बापू लक्ष्मण लामखड़े।

बापू ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सहयोग से असाधारण कारनामे किए। उनकी साहसिक प्रवृत्ति, तेज बुद्धि और गुप्तचर जैसे गुणों ने उन्हें अद्वितीय बना दिया। कस्टम्स विभाग की आधिकारिक पुस्तिका में बापू को छठी इंद्रीय



वाला व्यक्ति बताया गया है। उनकी सबसे बड़ी ताकत थी उनका विश्वासपात्र सहयोगी नेटवर्क और उनका खुद का खुफिया जाल। बापू ने कई बार अपने प्राणों की परवाह किए बिना अकेले तस्करों और अपराधियों का मुकाबला किया। कस्टम्स विभाग ने उन्हें एक किंवदंती के रूप में सम्मानित किया है।

बापू की 41 वर्षों की सेवा ने मुंबई के अंडरवर्ल्ड और तस्करों को घुटनों पर ला दिया। बापू ने अपने साहस और परिश्रम से कानून और न्याय का डर अपराधियों में पैदा किया। उनकी मृत्यु के बाद भी उनके कामों की गूंज दूर-दूर तक सुनाई दी। उनकी साइकिल, जो उनके साथ हर मिशन पर जाती थी, कस्टम्स ऑफिस में रखी गई। बापू के साहसिक और देशभक्ति भरे जीवन को हमेशा याद किया जाएगा। जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे का नाम मुंबई कस्टम्स के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है।

हम हिंदी फिल्मों के जरिये देखते हैं की मुंबई के अंडरवर्ल्ड माफिया सरदारो ने मुंबई को आतंकित किया था लेकिन सच्चाई यह है कि मुंबई कस्टम्स से एक आवाज हमेशा गूंजती थी, जिसने इन सभी भाईयों और अपराधियों के दिलों में डर पैदा किया था। वह आवाज थी जमादार बापू लक्ष्मण लामखड़े की।

उनके देहांत के बाद 2-3 साल में सभी मुंबईकर और उनका कस्टम्स डिपार्ट्मेंट भी उनको भूल गया। उनका गौरवशाली इतिहास डिपार्ट्मेंट के लिए अतीत के पन्नों में खो गया था। लेकिन जब 2011 में कस्टम्स डिपार्ट्मेंट की यूनियन 'मुंबई कस्टम्स ग्रुप्स-सी ऑफिसर्स यूनियन' और गोदी कामगारों का संगठन, 'मुंबई पोर्ट ट्रस्ट डॉक अँड जनरल एम्प्लॉइज यूनियन' ने हाथ में हाथ मिलाकर बापू की जन्म जयंती और पुण्यतिथि बड़े पैमाने पर मनाना शुरू किया। उनकी याद में कई गतिविधियां शुरू की गई।

2022 में उनकी जन्मशताब्दी पर उनके नाम का डाक टिकट जारी करने के लिए भारत सरकार के फिलाटेलिक डिपार्ट्मेंट को पत्र लिखा गया है लेकिन डाक टिकट जारी न हो सका। लेकिन इससे पहले 4 दिसम्बर 2018 को कस्टम्स डिपार्टमेंट की यूनियन ने उनकी चालीसवीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाकर एक नया इतियास रचा। इस फिल्म के टीजर को डब्ल्यू.सी.ओ. यानि वर्ल्ड कस्टम्स आर्गनाइजेशन के व्यासपीठ पर 182 देशों के वरिष्ठ कस्टम्स अधिकारियों के सामने प्रदर्शित किया गया।

2 जुलाई 2024 को बापू की 102वीं जन्म जयन्ती पर मुंबई कस्टम्स के मुख्यालय में एक शानदार समारोह में मुंबई कस्टम्स के सभी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खिलाडियों को बापू के नाम का स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस समारोह के अध्यक्ष प्रधान मुख्य आयुक्त श्री पी.के. अग्रवाल जी थे तो मुख्य अतिथि के रूप में कस्टम के सेवानिवृत्त उपायुक्त और मल्लखम्ब खेल के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी और गुरुवर्य पद्मश्री उपाधि से सम्मानित श्री उदय देशपांडे जी उपस्थित थे। साथ ही कस्टम के अनेक उच्चाधिकारी गण भी उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रधान मुख्य आयुक्त श्री पी.के. अग्रवाल जी ने घोषणा की कि हर साल बापू की जन्म जयंती पर मुंबई कस्टम्स में स्पोर्ट्स वीक मनाया जायेगा। मुंबई कस्टम्स ने इस साल 20 जुलाई 2024 को उनकी जन्म जयंती पर उनके जन्म गांव मंगलूर में उनकी पुतले के स्थान पर कस्टम्स डिपार्टमेंट का अधिकृत ध्वज स्थापित किया। भारतीय कस्टम्स के इतिहास में यह पहला अवसर है जहां भारतीय कस्टम्स का अधिकृत ध्वज ऑफिस के बाहर के इलाके में स्थापित किया गया हो। इस मौके पर वृक्षारोपण

अभियान के अंतर्गत 'जमादार बापू लक्ष्मण लामखडे ऑक्सीजन पार्क' का उद्घाटन भी किया गया।

**प्रस्तुति- बाळकृष्ण लोहोटे**

❑❑❑

विजय गर्ग

# पंजाब में गणित विश्वविद्यालय स्थापना की आवश्यकता

भारत में रामानुजन और आर्यभट्ट जैसे महान गणितक पैदा हुए हैं। भारत में विभिन्न गणितीय शोध की पहचान रामानुजन और आर्यभट्ट ने दिलवायी है। कुछ छात्र इस विषय में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। वे एक उबाऊ और कठिन, जटिल विषय मानते है। केवल छात्र ही नहीं शिक्षक भी इस विषय को पहले मुश्किल मानते है। गणित विषय के प्रति प्रेरित करने के लिए गणित विषय के बारे में छात्रों को ज्ञान दे, उसके तत्वों के बारे में, गणित के पाठ्यक्रमों, गणित क्षेत्र में नौकरियों और रोजगार के अवसर बहुत महत्वपूर्ण है। गणित विषय में छात्रों में रूचि विकसित करने हेतु गणित महीना, गणित सप्ताह, गणित जश्न मनाने की जरूरत है।

संबंधित गणित विषय बुद्धिजीवी, विशेषज्ञों, प्रासंगिक गणित सामग्री, गणित, साहित्य और गणित विश्वविद्यालय के अलग निर्माण से गणितीय तत्वों एक ही जगह में उपलब्ध करावाया जाए। गणित के तरीके आसान और दिलचस्प बनाने के लिए के लिए खोज की जाए। गणित के अनुसंधान काफी हद तक जरूरी है। कुछ एक बदलाव करने की जरूरत है। गणित की आज बहुत अधिक मांग है। इसके बिना, हर जीवन, हर राज्य और हर देश अधूरा है। पुस्तकों के विशेषज्ञों से मिलकर बीजगणित, त्रिकोणमिति को आसान बनाना चाहिए। बच्चों को वास्तविक मे गणित पढ़ने का उद्देश्य पता नहीं है। विश्वविद्यालय को समय-समय पर छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए स्कूलों एवं कॉलेजों में अपने विशेषज्ञों को भेजना चाहिए।

10 वीं कक्षा तक गणित सरल और मूल भाषा में है। लेकिन 11वीं में विषय पाठ्यक्रम के रूप में, नए क्षेत्र और विदेशी भाषा में छात्र अक्सर होल्ड खो रहे है। लेकिन हर संभव तरीके से बुद्धिजीवियों की गरिमा बनाए रखने के लिए प्रयास करना चाहिए। समय हमेशा बदलता है। इस बदलाव में पूर्ण भूमिका सरकार की होनी चाहिए। पहले से ही चिकित्सा विश्वविद्यालय, तकनीकी विश्वविद्यालय, पशु चिकित्सा विश्व-विद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय की स्थापना के रूप में हो चूकी है। गणित विश्व-विद्यालय की स्थापना की जानी चाहिए। इसके बारे में सरकार को मूलरूप में पूरा विचार करना चाहिए।

केंद्र और राज्य सरकार को गणित विश्वविद्यालय की स्थापना की पहल करनी चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, मलोट पंजा।

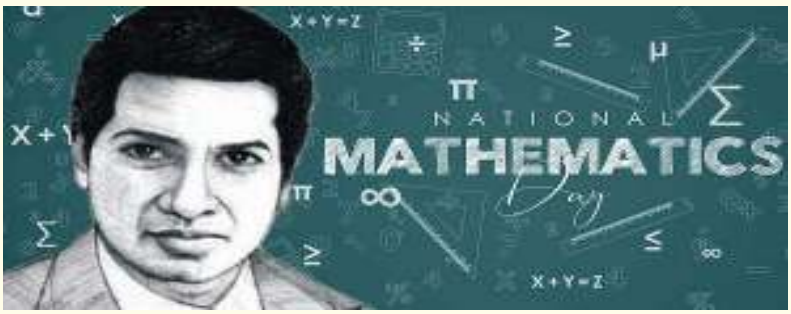

❑❑❑

डॉ. सुलभा कोरे

**डॉ. सुलभा कोरे, हिन्दी और मराठी साहित्य क्षेत्र में समान रूप से विचरण करती हैं। 'आत्मकथ्य' तथा 'साक्षात्कार' में उन्हें विशेष महारत हासिल है तथा संपादन उनका क्षेत्र है। आपने अनेक कॉफी टेबल बुक्स तथा पत्रिकाओं का कुशल संपादन किया है तथा हिंदी, मराठी और अँग्रेजी में आपकी 33 पुस्तकें प्रकाशित हुई है। अनेक पुरस्कारों से आपको सम्मानित किया जा चुका है। ज्ञातव्य हो कि आप 'आसरा मुक्तांगन' के संपादन मंडल पर हो तथा उनके अनेक अंकों का आपने समय समय पर संपादन किया है।**

# जीवन यात्रा

कितना आदतों में शुमार हो जाता है, जिंदगी के साथ बतियाना, चर्चा करना, विचार विमर्श करना और फिर झगड़ना भी!

जिंदगी बहुत कुछ देती है। सबसे महत्वपूर्ण बात जो जिंदगी देती है, वह है जीवन। जीना, जीने का मौका। हम जब पैदा होते हैं तब उस पैदा होने के साथ एक जीवन हमें प्राप्त होता है, एक जिंदगी हमें मिल जाती है, जीने के लिए! हालांकि उस जीवन के साथ ही मौत का सिला भी लिखा हुआ होता है। वह होता ही है। जिंदगी या जीवन के साथ वह सिला पैदा होता है और साथ-साथ किसी छाया की तरह हमारे साथ चलता रहता है। हम जीवन के रंगों और लहरों से इतने निहाल हो जाते हैं कि हमें पता ही नहीं चलता कि हां, एक साया हमारे साथ-साथ चलता है जो कभी भी इस बेमिसाल सफर को या फिर इस यात्रा को अपनी छांव में लेकर सभी रंगों या लहरों को थमने के लिए मजबूर करेगा।

हम पैदा होते हैं, मां के साथ जुड़ी हुई हमारी गर्भनाल को हमारी नाभि के पास काट दिया जाता है। अब तक अर्थात नौ महीनों तक जो दुनिया हमारे इर्द-गिर्द होती है, वह अंधेरे से भरी और सीमित होती है। उस सीमित दायरे में हमारी नौ महीनों और नौ दिनों की यात्रा पूरी हो जाती है। हालांकि जरूरी नहीं कि इस यात्रा की यह अवधि उतनी ही हो। कभी-कभार इस अवधि में कटौती होती है तो कभी कभार यह अवधि बढ़ भी जाती है। लेकिन उस अवधि के समाप्त होने के बाद दायरे में सिमटी जिंदगी की यात्रा की दिशा में रोशनी होने लगती है। चंद लम्हों, चंद सांसों की उथल-पुथल और अंधेरे तथा सीमित दायरे से मुक्ति पाकर एक जान, एक जीवन रोशनी में अपनी आंखें खोलने के प्रयास में बाहरी दुनिया में आ जाता है। रोशनी के इस बाहरी रेले से भयचकित, आतंकित होकर मुंह फैला कर 'ट्याहों' कर रोने लगता है। उस जान का यह पहला आगाज, इस दुनिया में, इस जीवन में! जिंदगी जीने की दिशा में उठाया गया उसका वह पहला कदम!

फिर तो यात्रा शुरू हो जाती है। हालांकि कुछ जानों को इस यात्रा तक भी पहुंचने का मौका नहीं मिलता। मां के गर्भ में ही वह जान खत्म हो जाती है या उसे खत्म किया जाता है। कभी लापरवाही, कभी ज्यादा एहतियात की इस यात्रा में इस तरह जिंदगी द्वारा यात्रा करना, अपने आप में अनूठा है।

रोशनी की दुनिया में हमारा यानी जीवन का पहला आगाज रोने के साथ ही होता है। यह रोना भी बेहद जरूरी

होता है। अन्यथा चुपचाप पैदा होना कोई मायने नहीं रखता। आपका चुपचाप पैदा होने का मतलब या तो आप जीवनहीन हो या आप कुछ अपवाद या कमियां लेकर पैदा हुए हो, ऐसा माना जाता है। डॉक्टरों की कोशिश होती है कि आपको रुलाया जाए। वह फिर आपको सर के बल पर हाथों में उल्टा टांग देता है, आपकी पीठ पर थपथपाता है, आपके गालों पर भी थपकियां देता है और कोशिश करता है कि आप इस दुनिया में अपने आगमन का आगाज स्वयं रोकर करें और अपने आसपास के लोगों को सूचना दे कि इस दुनिया में हमारा आगमन हो चुका है और अब किसी भी चुनौती या संघर्ष के लिए हम तैयार हैं।

जीवन मिल गया है। अब आगे की यात्रा शुरू हो जाती है। दुनिया की चकाचौंध से अपरिचित, अनजान जान फिर इस जीवन के साथ, इस दुनिया के साथ अपना तालमेल बिठाने की कोशिश में व्यस्त हो जाती है।

जिस गर्भ से निकल कर वह इस दुनिया में कदम रखता है, उसी गर्भ की धात्री उसके पालन पोषण में व्यस्त हो जाती है। वह उसे अपना दूध पिलाती है, उसे नहलाती है, उसकी टट्टी पेशाब साफ करती है, उसके लिए लोरियां सुनाती है, उसका जी बहलाने की कोशिश में वह उसके साथ हर तरह की बातचीत करती है, उसे सिखलाती है, उसके हाथ पैरों को सही अंदाज में बढने हेतु उसके सभी अंगों को वह सहलाती है, मसाज करती है। उसका हर प्रयास इस दिशा में होता है कि जिस जान को उसने जन्म दिया है, उसे सही परिप्रेक्ष्य में इस दुनिया के लिए लायक बनाने तथा तदनुसार उस पर संस्कार करने में वह अपने जी जान से जुट जाती है. उसे साथ देता है, उसका अपना जीवन साथी, उसका परिवार तथा जिस समाज में वह रहती है वह समाज!

उस जान को वे लोग नाम देते हैं, अपना उपनाम देते हैं, एक परिचय-एक पहचान देते हैं और फिर आगे की यात्रा की रफ्तार बढ़ती जाती है। संस्कारों का सिलसिला जारी रहता है। जब वह जान बढ़ने लगती है, तब उसका बढ़ना पूरे परिवार के लिए एक अलग-सा, अनूठा अनुभव देता रहता है। वह हाथ पैर हिलाता है, कुछ भंगिमाएं करता है, वह हंसता है, कुछ अलग तरह से अपनी अभिव्यक्ति देता है, वह रोता है, अपना मुंह बनाता है, वह खुद होकर पलटने लगता है. फिर पेट के बल रखते हुए आगे बढ़ने लगता है। वह बैठने की कोशिश करता है, वह खड़ा होने का प्रयास करता है, वह गिरता है, ठोकर खाता है लेकिन सब लोग उसके खड़े होने के लिए उसे प्रोत्साहित करते हैं, उसके बार-बार गिरने के बावजूद भी खड़ा करने की कोशिश करते हैं। वह भी अनेक बार गिरने के बावजूद खड़ा होना सीख ही जाता है। फिर बारी आती है, कदम बढ़ाने की! लड़खड़ाते हुए कदम उठाने की, फिसलने की, गिरने की। लेकिन आखिरकार वह पल भी आता है जब वह एक कदम उठाने के बाद दूसरा कदम उठाता है। डगमगाते हुए चलता है लेकिन बाद में ठोस रुप से चलने भी लगता है, और बाद में दौड़ने भी!

फिर तो जिंदगी की राह पर अपने कदमों के बलबूते पर उसकी यात्रा शुरू हो जाती है, अथक...अनवरत...!

इस यात्रा में उसका बचपन, पढ़ाई, जवानी, नौकरी या जीवन यापन हेतु किया हुआ व्यवसाय, विवाह और उसके पश्चात वहीं- नए जीव को जन्म देने की प्रक्रिया। नए संस्कारों, समाज के निर्माण की प्रक्रिया...फिर एक नई शुरुआत...फिर एक नयी जान की यात्रा का शुभारंभ...

फिर इस नयी जान की यात्रा के दौरान हमने जिन बातों का जिक्र भी किया नहीं हैं, वे सभी बातें भी उसके सामने होती है। उसकी यह यात्रा वैसे भी इतनी आसान या सहज नहीं होती है। कभी-कभार कुछ बातें आसानी से हो जाती है लेकिन अधिकांश यात्रा, हर बात को पाने हेतु की गई जद्दोजहद से शुरू हो जाती है। उसका झगड़ना बदस्तूर जारी रहता है। इस झगड़ने या लड़ाई में कभी उसकी जीत होती है तो कभी वह हार भी जाता है। यदि उसके माद्दे में 'जान' हो तो फिर से नयी उड़ान भरने के लिए वह अपने पर फैलाता है, अपने डगमगाते पैरों से वह चलने की कोशिश करता है। कभी हारकर, थककर बैठ भी जाता है तो कभी सफलता से खुश होकर यूं ही गुनगुनाता जाता है। लेकिन यात्रा के किसी भी पड़ाव पर उसे रुकना नहीं है उसे ठहरना नहीं है। नसीब कहिए या फिर उसे और कुछ भी नाम दीजिए, अपनी यात्रा के दौरान उसके साथ इसका झगड़ना बदस्तूर जारी रहता है। जो उसके हिस्से में आया हुआ होता है, कमोबेश कभी उससे बेहतर या कभी उसे कमतर, उसकी नई जान की हिस्से में भी आता है। यात्रा का यही तो मतलब होता है। गिरना, उठने की कोशिश करना, संभलने का प्रयास करना, उठना फिर लड़खडाना, फिर से गिरना और फिर आगे बढ़ते जाना...

❑❑❑

# मित्रता का यह अटूट रिश्ता

**सुनील कुमार महला**

**(फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार)**

कहने को तो डब्बू जानवर था। पालतू नहीं था डब्बू। गली का कुत्ता था। लेकिन गली के और कुत्तों की तरह आवारा और लावारिश नहीं था। डब्बू अन्य कुत्तों की तरह भिखारियों व आने-जाने वालों पर बिना बात के कभी नहीं भौंकता, लेकिन किसी अनजान व्यक्ति पर शक हो जाने पर भौंक-भौंक कर सभी को सचेत रखता। डब्बू विजय के घर के पास गली में रहता, डब्बू को डब्बू नाम भी विजय ने ही दिया था। विजय हमेशा से ही जानवरों से प्रेम, दयाभाव रखने वाला इंसान था। गाय और कुत्तों को रोटी डालने को वह बहुत ही पुण्य और सेवा का काम समझता था। डब्बू एक दिन बीमार पड़ गया था, तो विजय ने ही उसे खाना-पानी देकर ठीक किया था। विजय गली के अन्य लोगों की तरह नहीं था, जो कुत्तों को दुत्कार देकर भगा देता था। वह फैक्ट्री दफ्तर से निकलते समय डब्बू को प्यार से पुकारता और उसे रोटी देता। दिन-ब-दिन विजय का यह क्रम जारी रहा और एक समय ऐसा आया जब डब्बू और विजय एक दूसरे को अच्छी तरह से जानने-पहचानने लगे और दोनों के बीच मित्रवत संबंध कायम हो गये। अब विजय कभी डब्बू को किसी बात को लेकर झिड़क और दुत्कार भी देता तो भी वह विजय के साथ प्यार और दोस्ती ही बांटता था। विजय इस बात को जानता था कि जानवर भी इंसान की तरह ही प्रेम, प्यार और दया के भूखे होते हैं, विशेषकर कुत्ते। विजय इस बात से भी अच्छी तरह से वाकिफ था कि सिर्फ कुत्ता ही ऐसा जानवर है जो किसान के फसलों से भरे खेत में से भी बिना कुछ खाये पीये चुपचाप निकल जाता है। विजय ने यह भी सुन रखा था कि महाभारत में परिजनों ने युधिष्ठिर का साथ छोड़ दिया था लेकिन जीवन के आखिरी क्षणों तक उनके साथ एक कुत्ता था। इसलिए विजय का कुत्तों से विशेष लगाव था, विशेषकर डब्बू तो उसका खास साथी हो गया था। सच तो यह है कि डब्बू विजय का और विजय डब्बू का हिमायती था। विजय डब्बू को जब भी नहीं देखता, तो वह बेचैन हो उठता था। बहुत ही समझदार होने के साथ-साथ डब्बू बहुत ही वफादार भी था। कहने को तो डब्बू का कोई मालिक नहीं था, लेकिन विजय ने डब्बू को सदैव अपने परिवार का एक सदस्य माना था, शायद सदस्य से भी बढ़कर। एक अजीब सा, सुंदर-सा, खूब प्यारा रिश्ता था- विजय का डब्बू के साथ। डब्बू, विजय के लिए कभी भी आक्रामक नहीं था, और जब भी डब्बू फैक्ट्री में काम पर जाता और वापस लौटता तो डब्बू अपनी पूंछ हिलाकर उसके साथ अठखेलियां करता। फैक्ट्री मैनेजर था विजय। खूब पैसे वाला लेकिन जानवरों के प्रति असीम प्रेम रखने वाला और डब्बू तो शायद उसकी आंखों का तारा ही था। डब्बू, विजय के लिए ईमानदारी व वफादारी की वह छवि था, जो विजय के प्रति अपना सबकुछ सौंप देता था लेकिन कभी भी पीछे नहीं हटता था। एक हटकर रिश्ता था- डब्बू और विजय के बीच, लेकिन जब रिश्ते दूर होने लगें या रिश्ते बनाने वाले न रहें या उन पर कभी

कोई आंच आ जाए तो दिल और आत्मा को बड़ी तकलीफ होती है।

शायद आदमी के लिए किसी जानवर के मरने का दु:ख इतना बड़ा नहीं होता। दु:ख छोटे-छोटे ही होते हैं, रोजमर्रा के दु:ख, टुकड़ों-टुकड़ों में बंटे दु:ख। विजय की जिंदगी में अचानक दु:ख का दिन आ धमकता था। दरअसल, आज डब्बू को शायद किसी ने खतरनाक जहर दे दिया था। किसी की हद से ज्यादा नफरत ने आज डब्बू की जान लेने की कोशिश की थी। जहर के कारण डब्बू बहुत बुरी तरह से तड़प रहा था। विजय उस दिन शाम को जैसे ही फैक्ट्री से काम करके वापस लौटा उसने देखा कि डब्बू उसके घर की दहलीज पर पड़ा अपनी अंतिम सांसें गिन रहा था। विजय ने तुरंत डब्बू के सिर पर हाथ फेरा और कहा- 'डब्बू मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा, तुम मुझे जीवन के बीच अधर में छोड़कर कैसे जा सकते हो, एक तुम ही तो जो जीवन की मझधार में मेरे असली साथी हो, हिम्मत रखो दोस्त, मैं हूं ना, मैं तुम्हें हास्पीटल ले जाऊंगा और अच्छे से अच्छे डॉक्टर से तुम्हारा इलाज करवाऊंगा।' इतना कहकर विजय ने गली में पास ही खड़े अपने मित्र धीरज की सहायता से डब्बू को अपनी गोद में उठाया और तुरंत अपनी गाड़ी से उसे शहर के पशु चिकित्सालय ले गया, लेकिन होनी को शायद उसकी मृत्यु आज मंजूर थी। डब्बू का बच पाना बहुत मुश्किल था। हास्पीटल में वेटेरनरी डॉक्टर ने विजय से कहा- 'मैंने डब्बू को कुछ इंजेक्शन, दवाएं और ड्रिप दे दीं हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हम डब्बू को बचा पायेंगे। बहुत ही खतरनाक जहर दिया गया है डब्बू को।' विजय ने डॉक्टर से कहा- 'नहीं डॉक्टर साहब, ऐसा न कहिए। आप चाहें जो भी कीजिए, जो भी दवाएं आपको चाहिए आप बेफिक्र बताएं, जिस भी हास्पीटल में डब्बू को रेफर करना है कीजिए, जितना भी खर्च डब्बू के इलाज पर लगे, मैं वहन करने के लिए तैयार हूं, लेकिन जैसे-तैसे मेरे जिगरी यार को आप बचा लीजिए, मैं आपसे मिन्नतें करता हूं।' डॉक्टर ने विजय से कहा- 'विजय सर, आप समझिए, भावनाओं में मत बहिए, अब बहुत देर हो चुकी है। जहर की मात्रा भी बहुत ज्यादा है और अब तो डब्बू के सारे शरीर में जहर फैल चुका है। सच तो यह है कि यह किसी भी हाल में नहीं बचेगा। मुझे बहुत खेद है।' डॉक्टर ने जैसे विजय के आगे अपने सारे हथियार डाल दिए थे। विजय डॉक्टर की बातें सुनकर यकायक मायूस हो गया लेकिन फिर भी उसने उम्मीद की किरणों के बांहें डालकर पास खड़े डॉक्टर को पुन: झिझौड़ा और गिड़गिड़ाते हुए उनके पैरों में गिर गया और कहा- 'ऐसा न कहिए, डॉक्टर साहब! भगवान के लिए इसे कैसे भी बचा लीजिए।' विजय के झिझौड़ने पर भगवान के नाम से डॉक्टर को याद आया और वेटेरनरी डॉक्टर ने विजय से कहा- 'आप इसे लुधियाना ले जाइए, हमारे यहां ज्यादा सुविधाएं मौजूद नहीं हैं, वहां पशुओं/जानवरों का एक बहुत बड़ा हॉस्पिटल है, और जानवरों के प्रसिद्ध डॉ. अकरम ही इसका जीवन किसी प्रकार से बचा सकते हैं।' विजय फूट-फूटकर रोने लगा था, इतना तो शायद विजय अपने किसी सगे-संबंधी की मृत्यु पर भी नहीं रोया था। इधर उसका मित्र धीरज देख रहा था, कि फफक उठा था आज विजय, और हिचकियों पर हिचकियां ले रहा था। उसके स्मार्ट गौरे चेहरे से आंसू पर आंसू ढुलक रहे थे, लेकिन वेटरनरी डॉक्टर से डब्बू को लुधियाना ले जाने की बात ने उसके मन में उम्मीद की कुछ किरणें जगा दी थी। धीरज ने उसे खूब ढ़ाढस बंधाने की कोशिश की, लेकिन विजय की रुलाई नहीं रुकी, फिर भी न जाने क्यों उसके ह्रदय के एक कोने में उम्मीद का दीया लगातार जल रहा था। विजय को पूरी उम्मीद थी कि डॉ. अकरम डब्बू को बचा लेंगे।

विजय ने न आव देखा और न ताव और तुरंत डब्बू को लेकर अपनी गाड़ी से लुधियाना पहुंच गया, वहां बड़े व प्रसिद्ध डॉक्टर डॉ. अकरम को दिखाया। डॉक्टर ने गहन जांच के बाद सबसे पहले डब्बू को उल्टी को प्रेरित करने वाला उपचार दिया और साथ ही सात दिन की दवाईयां, कुछ महंगे इंजेक्शन और ड्रिप डब्बू को दिए। डब्बू को गहन आब्जर्वेशन में रखा गया। डॉ अकरम ने विजय से इलाज के समय कहा था- 'मैंने दवाएं, इंजेक्शन, ड्रिप डब्बू को दे दिए हैं, आपका प्यार-स्नेह और ईश्वर की असीम कृपा इसे जीवन दे सकती है। दवाओं के साथ दुआओं की, स्नेह प्यार, सेवा तथा इससे लगातार बातचीत की जरूरत है, इसे सहलाने की जरूरत है।' उस दिन विजय डब्बू के इलाज के समय पूरी रात उसके पास बैठा रहा, खाना तो क्या विजय ने पानी तक नहीं पीया। विजय बार-बार ईश्वर से डब्बू की जिंदगी की फरियाद कर

रहा था। उसने डब्बू को खूब सहलाया, उससे प्यार और स्नेह से बात की, उसके हौंसले को बुलंद बनाए रखने का प्रयास किया। कुछ समय बाद डब्बू को उल्टी आई। विजय ने तुरंत डॉ. अकरम को इस बारे में बताया। बाद में डॉक्टर ने डब्बू के जठरांत्र पथ में विभिन्न विषाक्त पदार्थों को बांधने और आगे अवशोषण को रोकने में मदद करने वाली लगातार कुछ खुराकें दीं। विजय यह सब देख रहा था और याद कर रहा था कि कैसे डब्बू विजय के खाना खिलाने पर ही खाना खाता था। वह उसका बेसब्री से इंतजार किया करता था। विजय की स्मृति पटल पर दौड़ आया कि रोजाना की तरह आज सुबह भी डब्बू स्टेशन तक उसे छोड़ने गया था, लेकिन शाम को साढ़े पांच बजे उसे लेने नहीं आया। पिछली गर्मियों में जब एक कोबरा सांप विजय के घर में घुसने का प्रयास कर रहा था, डब्बू ने उसे अपने पंजों से मार गिराया था। विजय याद करने लगा कि रामू काका के घर में तीन बरस पहले जब चोर घुसने का प्रयास कर रहे थे तो अपनी भौं-भौं से उसने रामू काका के साथ साथ सभी मोहल्ले वालों को जगा दिया था और चोर दुम दबाकर भाग गए थे और चोरी नहीं हो पाई थी। डब्बू की वाच डाग की भूमिका याद करके विजय की आंखें बार-बार डबडबा रही थीं। आज डब्बू अचेत-सी अवस्था में उसके सामने पड़ा था। विजय मन में विचार करने लगा कि हर शाम को जब वह खाना खाने के बाद शहर में बने पार्क में घूमने जाता था तो डब्बू विजय के घर के गेट के बाहर उसका बेसब्री से इंतजार करता। वह विजय से लिपट जाता। एक छोटे बच्चे की तरह उसके साथ खेलता, भौं-भौं करता, अपना स्नेह-प्यार जताता। यहां तक कि अपने दोनों पंजों से विजय की बांहों में आने का प्रयास करता। अखबार वाला कभी जल्दबाजी में अखबार को विजय के घर की बजाय बाहर गली में फेंक जाता तो डब्बू उसे उठाकर विजय के घर की दहलीज पर डाल देता था। जब विजय का बेटा मयंक स्कूल जाने लायक हुआ तो डब्बू रोज उसे स्कूल छोड़ने साथ जाता, सोमवार से शनिवार तक रोज मयंक के स्कूल पहुंचा था डब्बू। विजय की स्मृति पटल पर यह बात कौंधी कि उस दिन जब मयंक के निमोनिया हो गया था और जब मयंक हास्पीटल में भर्ती था, तो डब्बू मयंक के हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होने तक पूरी रात हॉस्पिटल के बाहर बैठा रहा था और मयंक के डिस्चार्ज होने पर डब्बू उन सबके साथ घर आया था। यह सब याद करते हुए वह डब्बू को लगातार सहला रहा था। विजय, लुधियाना में हॉस्पिटल में डब्बू और अपने दोस्त धीरज के साथ बैठा-बैठा यह सबकुछ सोच ही रहा था कि कब सुबह हो गई उसे पता ही नहीं चला। डॉ. अकरम व अस्पताल के अन्य कर्मी अभी ड्यूटी पर नहीं पहुंचे थे। इधर, सुबह के लगभग नौ सवा नौ बजे विजय ने देखा कि डॉक्टर की दवाएं, उसकी दुआएं शायद काम कर रही थीं, और अब डब्बू धीरे-धीरे सामान्यत: स्थिति में आ रहा था। डॉ. अकरम व अन्य कर्मी लगभग साढ़े नौ बजे चिकित्सालय में पहुंच चुके थे। विजय ने डॉ. अकरम के अस्पताल पहुंचते ही तत्काल डब्बू की हालत अच्छी होने के बारे में बताया और उनसे डब्बू के बारे में कुछ सलाह मशविरा के बाद डब्बू को बड़े प्यार से कुछ खाना व पानी आदि दिया। डब्बू को एक और दिन हास्पीटल में ही डॉक्टर अकरम के आब्जर्वेशन में रखा गया। अगले दिन डब्बू का स्वास्थ्य लगभग- लगभग ठीक हो गया था। विजय और धीरज ने डॉ. अकरम को डब्बू की जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. अकरम ने ने विजय से कहा- 'इतने खतरनाक जहर से बाहर निकल जाना वाकई एक करामात है। अपने पच्चीस साल के डॉक्टरी कैरियर में मैंने इतने खतरनाक जहर से किसी जानवर को बचते नहीं देखा। विजय! यह सब आपकी दुआओं और डब्बू के साथ असीम प्यार-स्नेह का ही असर है, जो डब्बू की जान बच गई। मैंने देखा कि तुमने डब्बू की हालत ठीक नहीं होने तक अपनी पलकें तक नहीं झपकी, न ही कुछ खाया-पीया। एक छोटे बच्चे की भांति तुमने डब्बू की देखभाल की। डब्बू के प्रति तुम्हारे प्यार और स्नेह को देखकर मैं वाकई अंचभित हूं। ईश्वर तुम दोनों के स्नेह को सदैव बनाए रखें, तुम दोनों के बीच सदैव मित्रता का यह अटूट रिश्ता और आपसी विश्वास बना रहे।' डॉ. अकरम ने विजय के कंधे पर हाथ रखते हुए उसकी पीठ थपथपाई और अपने चैंबर में चले गए। विजय अपने प्यारे डब्बू और अपने मित्र धीरज के साथ खुशी-खुशी वापस अपने घर की ओर लौट रहा था और अब उसकी आंखों में खुशियों के आंसू थे।

**उत्तराखंड**

❑❑❑

### सुमना की कथा

# उम्र से नहीं, ज्ञान से होता है व्यक्ति बड़ा

**हृषिकेश शरण**

**कुशल लेखक**
**लोकप्रिय वक्ता**
**बौद्ध साहित्य विशेषज्ञ**
**बुद्ध का जीवन एवं शिक्षा**
**होलिस्टिक मैनेजमेंट सहित**
**विविध विषयों पर**
**देश विदेश में व्याख्यान।**
**एडविन ऑरनल्ड की पुस्तक**
**'द लाइट ऑफ एशिया'**
**का हिन्दी अनुवाद।**

अनाथपिंडिक शास्ता के समर्पित शिष्यों में एक था। उसे 'अनाथों का नाथ' के रूप में जाना जाता है। उसने जेतवन में शास्ता के लिए एक बहुत बड़ी धनराशि खर्च कर विहार बनवाया था।

उसकी एक पुत्री थी। उसका नाम सुमना था। वह पिता के धर्म के काम में हाथ बंटाया करती थी। अनाथपिंडिक अपनी बेटी से बहुत खुश था। पर समय पर किसका वश चलता है? एक बार सुमना बीमार पड़ी और फिर बिस्तर से उठ नहीं सकी। दुनिया से ही चल बसी। चलने से पूर्व उसने अपने पिता को भाई कहकर संबोधित किया।

अनाथापिंडिक पुत्री के देहावसान पर बहुत दु:खी था और उससे भी अधिक दु:खी था यह सोचकर कि मरने से पहले उसकी बेटी ने उसे 'भाई' कहकर पुकारा था। उसका मन विक्षिप्त था। उसे लग रहा था कि मरने से पहले उसकी बेटी ने अपना मानसिक संतुलन खो दिया था। कुछ समझ नहीं पा रहा था कि ऐसा कैसे हो गया।

बोझिल मन से वह शाक्य मुनि के पास पहुंचा तथा उन्हें प्रणाम कर बैठ गया। शास्ता ने उसके चेहरे का हाव-भाव देखकर उससे पूछा कि वह इतना

परेशान क्यों दिख रहा है। तब अनाथपिंडिक ने अपनी परेशानी का कारण बताया। उसकी समस्या सुनकर बुद्ध ने समझाया, "अनाथापिंडिक! तुम्हें चिंता करने की बात नहीं है। तुम्हारी पुत्री ने अपना मानसिक संतुलन नहीं खोया था। तुम स्रोतापन्न हो और वह सकृदागामी थी। इस प्रकार आध्यात्मिक सीढ़ी पर वह तुमसे एक कदम आगे थी। इस नाते अगर उसने तुम्हें भाई कहकर संबोधित किया तो तुम्हें इसका बुरा नहीं मानना चाहिये"।

पुण्य करने वाला इस लोक में आनंदित होता है तथा प्राणांत के बाद परलोक में भी आनंदित होता है। इस प्रकार पुण्य करने वाला दोनों ही जगह आनंदित होता है। 'मैंने पुण्य किया है' यह सोचकर आनंदित होता है और सद्गति प्राप्त कर और भी अधिक आनंदित होता है।

❑❑❑

**संजुला सिंह 'संजू'**

**(वरिष्ठ पत्रकार, कवियित्री, लेखक और स्तम्भकार)**

# अयोध्या में दीपोत्सव

**अयोध्या दीपोत्सव-** 2024 अपने दिव्यता, भव्यता और अलौकिक आयोजन के लिए याद किया जायेगा।

**अयोध्या दीपोत्सव-** 2024 में बने दो कीर्तिमान।

**12 लाख 25 लाख 585 दीप** प्रज्वलित कर गिरीश बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में एक नया कीर्तिमान स्थापित हुए।

**1121 लोगों ने** एक साथ सरयू जी की आरती कर बनाया विश्व रिकॉर्ड

**गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड** की ओर से मुख्यमंत्री को इस कीर्तिमान का प्रमाण पत्र सौंपा गया।

प्रभु श्री राम का अयोध्या आगमन एक अद्भुत और अलौकिक घटना यह अयोध्या धाम को दुनिया के मानचित्र पर प्रस्तुत कर रहा है। अयोध्या धाम से दीपोत्सव दुनिया को नई प्रेरणा प्रदान करेगा यह दीप केवल अज्ञान के तमस को दूर करने का माध्यम ही नहीं बल्कि अन्याय और अत्याचार के तमस का विनाश करने वाला भी साबित होगा। अयोध्या का यह संदेश पूरे विश्व में जाना चाहिए। राम की पैडी पर 3डी होलोग्राफिक शो, प्रोजेक्शन मैपिंग, रामायण पर आधारित भव्य लेजर शो तथा ड्रोन शो का आयोजन दिव्य व नयनाभिराम आतिशबाजी का दिखा अद्भुत नजारा ऐसा लगा कि नए भारत का नया उत्तर प्रदेश और नए उत्तर प्रदेश की नई अयोध्या प्रभु श्री राम की सुंदरतम नगरी के रूप में स्थापित हो रही है। दीपोत्सव का यह कार्यक्रम दीप से दीप जलाने के माध्यम से सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को संबल देने की प्रेरणा देता हुआ दिखाई पड़ा। अयोध्या में दीपोत्सव 2024 भव्य एवं दिव्य रूप से मनाया गया दीपोत्सव की दिव्यता देखकर सनातन अयोध्या की कल्पना मन में जागृत हो गई। दीपोत्सव के अवसर पर अयोध्या धाम में दो नए विश्व कीर्तिमान भी बने पहले 25 लाख 12 हजार 585 दीप प्रज्वलित किया गया जिसने गिनीज

बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया तो दूसरा प्रदेश के मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री के नेतृत्व में सरयू घाट पर 1121 लोगों ने एक साथ सरयू जी की आरती कर एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। इस दीपोत्सव में 25 लाख से ज्यादा दीप सजाने, जलाने व देखरेख करने के लिए 30000 से ज्यादा स्वयंसेवकों ने अपना योगदान दिया तथा दीपोत्सव के अवसर पर मनमोहक आतिशबाजी हुई, 3डी होलोग्राफिक शो, प्रोजेक्शन मैपिंग तथा रामायण पर आधारित भव्य लेजर शो तथा ड्रोन शो का भव्य आयोजन किया गया। एक समय तो अयोध्या धाम की दिव्यता देखकर वास्तव में ऐसा लगा कि प्रभु श्री राम 14 वर्ष बाद वनवास काटकर अयोध्या धाम लौटे हैं गौरतलब है कि श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के बाद यह पहला दीपोत्सव था जिसे संस्कृत एवं पर्यटन मंत्रालय ने पुरी भव्यता और नव्यता के साथ मनाया। अयोध्या धाम में लोगों ने दीपों से जगमगाती अयोध्या 3डी पोलियोग्राफी शो रामायण पर आधारित भव्य लेजर लेजर शो तथा ड्रोन शो का नजारा अद्‌भुत और अलौकिक प्रतीत हो रहा था। अयोध्या धाम में दीपोत्सव 2024 को कई लाख लोगों ने जो केवल अयोध्या धाम के ही नहीं बल्कि देश के कोने-कोने से आए ने स्वयं देखा और महसूस किया। यह दीपोत्सव केवल भारत को ही नहीं बल्कि दुनिया को एक नई प्रेरणा देगा। यह आयोजन शांति और सौहार्द के रूप में अयोध्या से निकलकर पूरे देश में एक संदेश देगा। यह दीपोत्सव 2024 अपने आठवी संस्करण तक पहुंचते पहुंचते जन सहभागिता के लिए एक आदर्श बन गया है इस दीपोत्सव को दिव्य और भव्य बनाने के लिए अपनी भूमिका का निर्वहन करने वाले 30000 से अधिक स्वयंसेवा के जिसमें युवाओं की संख्या ज्यादा थी अपना योगदान दिया किसी भी धार्मिक आयोजन में किस प्रकार की स्वयंसेवकों की जन सहभागिता और प्रतिबद्धता, अनुशासनात्मक रूप से समयबद्ध कार्य निश्चित ही पूरे देश में सनातन धर्म के प्रचार प्रसार के लिए एक संदेश साबित होगी। बताते चले की प्रभु श्री राम के अयोध्या आगमन के उत्सव के रूप में दीपोत्सव का यह आयोजन इस श्रृंखला का एक हिस्सा है और इतना ही नहीं यह भी हर्ष और आश्चर्य का विषय है कि दुनिया की सबसे बड़ी महामारी कोरोना के समय भी दीपोत्सव का क्रम नहीं थमा और कोरोना कालखंड में भी दीपोत्सव में एक

साथ इतनी संख्या में दीप जलने के नए रिकॉर्ड बने। एक तरफ दीपोत्सव बहुत ही भव्य दिव्य और अलौकिक कार्यक्रम बना किंतु सारे देशवासियों के साथ-साथ अयोध्यावासियों की यह एक बड़ी जिम्मेदारी होगी कि यह शाश्वत कम इसी प्रकार चलता रहे। श्री राम एक आदर्श नागरिक, एक आदर्श पुत्र, एक आदर्श पति और एक आदर्श राजा के रूप में अपनी कर्तव्यों का पालन करके जो आदर्श स्थापित किया था वह युवाओं को अपने जीवन में उतरना होगा जिससे कि दीपोत्सव का असली अर्थ और इसके आयोजन का मकसद सार्थक हो सके।

❑❑❑

राम विलास शास्त्री

# संत निकोलस- दयालुता और उदारता की प्रतिमूर्ति

बचपन में आपने भी सैंटा क्लॉस की कई कहानियां सुनी होंगी। छोटे से मोजे में कागज के एक टुकड़े पर ढ़ेर सारी कामनाएं लिखकर अगली सुबह उनके पूरे होने का इंतजार भी किया होगा। हालांकि कई बार इस ख्याल ने आपका दिल भी दुखाया होगा कि क्या सैंटा क्लॉस सच में होता है या बस यह कहानियों में जिंदा है। तो चलिए आज आपको बता ही देते हैं कि असली सैंटा क्लॉस आखिर कहां रहता है।

संत निकोलस का जन्म तीसरी सदी में जीसस की मौत के 280 साल बाद मायरा में हुआ। वे एक रईस परिवार से थे। उन्होंने बचपन में ही अपने माता-पिता को खो दिया। बचपन से ही उनकी प्रभु यीशु में बहुत आस्था थी। रोवानिएमी में एक छोटा सा गांव है जिसे सैंटा विलेज के नाम से पुकारा जाता है। इस गांव में एक लंबी सफेद दाढ़ी वाला, लाल रंग के कपड़े पहने हुए एक व्यक्ति रहता है, जिसे लोग रियल सैंटा क्लॉज कहते हैं। इस गांव की खासियत है कि यहां घुसते ही लकड़ी से बनी झोपड़ियां नजर आती हैं। यहां का हर एक नजारा बचपन में सुनी कहानियों को हकीकत में होने का अहसास कराता है।

फिनलैंड में एक जगह है रोवानिएमी, माना जाता है कि यहीं पर सैंटा विलेज है। यहां कड़ाके की ठंड पड़ती है। 6 महीने दिन और 6 महीने रात वाला यह देश 12 महीने बर्फ की चादर से ढका रहता है।

इस गांव में एक ऐसी हट है जिसमें सिर्फ सैंटा और उनकी पत्नी रहते हैं। लाल और सफेद रंग से सजी सांता की झोपड़ी में खास चीज दूर से ही दिखाई देती है और वो है नन्हें बच्चों के ढ़ेर सारे खत। इन खतों को सांता और उनकी वाइफ बहुत संभाल कर रखते हैं। सांता की हट में एक हिस्सा ऐसा

है जहां से सांता क्लॉस लोगों से मिलता है। जिसे सैंटा का ऑफिस कहा जाता है। सैंटा विलेज घूमने आए लोग यहां सैंटा से मिलने के अलावा उससे बातें और तस्वीर भी खिंचवा सकते हैं। हालांकि सांता हट में घुसने का तो आपको कोई चार्ज नहीं देना होता लेकिन वहां खिंची फोटो सांता के पोस्ट ऑफिस से कुछ पैसे देकर खरीदनी पड़ती है।

सांता पार्क भी उनकी हट से कुछ ही दूरी पर बना हुआ है। इस पार्क में एंट्री करने के लिए आपको थोड़ी सी कीमत एंट्री फीस के रूप में चुकानी होगी। अच्छी बात यह है कि इसके बाद पूरे दिन कितनी ही बार इस पार्क में जा सकते हैं। दिन वत्म होते ही इस टिकट की वेलेडिटी भी खत्म हो जाती है। इस पार्क में तीन वास जगह हैं, एक जहां बर्फ के झूले हैं, दूसरा जहां छोटा सा आईस हाउस लोगों के बैठने के लिए बनाया गया है और तीसरा हिस्सा बॉर्नफायर के लिए तैयार किया गया है, जहां बैठकर लोग आग में हाथ सेंकते हैं। इस हकीकत में देखने के लिए आपको सबसे पहले रोवानिएमी सिटी पहुंचना होगा।

सांता क्लॉज, पश्चिमी ईसाई संस्कृति की एक लोक कथाओं का किरदार हैं- सांता क्लॉज को सेंट निकोलस, फादर क्रिसमस, क्रिस क्रिंगल, या सिर्फ 'सांता' के नाम से जाना जाता है। वे लोक कथाओं में प्रचलित एक व्यक्ति हैं। कई पश्चिमी संस्कृतियों में ऐसा माना जाता है कि सांता क्रिसमस की पूर्व संध्या, यानि 24 दिसम्बर की शाम या देर रात के समय के दौरान अच्छे बच्चों के घरों में आकर उन्हें उपहार देता है। सांता की आधुनिक आकृति की व्युत्पत्ति सिंटरक्लास की डच आकृति से हुई, जिसे संभवतया उपहार देने वाले सेंट निकोलस से सम्बंधित माना जाता है। सेंट निकोलस एक ऐसी ऐतिहासिक आकृति हैं, जो हेगिओग्राफिकल कहानियों में मिलती है। इसी से लगभग मिलती जुलती एक कहानी बीजान्टिन और यूनानी लोककथाओं में प्रचलित है, बेसिल ऑफ केसारिया। 1 जनवरी को ग्रीस में बेसिल का फीस्ट दिवस मनाया जाता है, इस दिन तोहफों का आदान प्रदान किया जाता है।

सांता क्लॉज को आम तौर पर एक मोटे, हंसमुख सफेद दाढ़ी वाले आदमी के रूप में चित्रित किया जाता है, जो सफेद कॉलर और कफ वाला लाल कोट पहनता है, इसके साथ वह चमड़े की काली बेल्ट और बूट पहनता है। यह छवि संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में 19वीं सदी में लोकप्रिय हो गयी। इस छवि को लोकप्रिय बनाने में तत्कालीन राजनीतिक कार्टूनिस्ट थॉमस नास्ट ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। संयुक्त राष्ट्र और यूरोप में, उन्हें अक्सर अमेरिकी सांता क्लॉज के रूप में चित्रित किया जाता है, परन्तु उन्हें अक्सर फादर क्रिसमस कहा जाता है।

क्रिसमस दो शब्दों 'क्राइस्ट' और 'मास' शब्द से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है ईसा मसीह का पवित्र महीना। इस पर्व को भारत समेत पूरी दुनिया में धूमधाम से मनाया जाता है। क्रिसमस का पर्व ईसाई धर्म के संस्थापक प्रभु यीशु के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है। क्रिसमस के दिन लोग अपने घरों को सुंदर तरीके सजाते हैं और क्रिसमस ट्री लगाते हैं। साथ ही चर्च में जाकर प्रार्थना करते हैं और कैंडल जलाते हैं। इसके अलावा तमाम तरह के व्यंजन बनाकर और पार्टी करते हैं और केक काटकर इस त्योहार को मानते हैं। वहीं छोटे बच्चों को इस दिन अपने सांता क्लॉज का इंतजार रहता है।

ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार प्रभु यीशु मसीह का जन्म 25 दिसंबर को हुआ था, जिसकी वजह से इस दिन को क्रिसमस के तौर पर मनाया जाता है। यीशु मसीह का जन्म मरियम के घर हुआ था। मान्यता है कि मरियम को एक सपना आया था। इस सपने में उन्हें प्रभु के पुत्र यीशु को जन्म देने की भविष्यवाणी की गई थी। इस सपने के बाद मरियम गर्भवती हुईं और गर्भावस्था के दौरान उनको बेथलहम में रहना पड़ा। कहा जाता है कि एक दिन जब रात ज्यादा हो गई, तो मरियम को रुकने के लिए कोई सही जगह नहीं दिखी। ऐसे में उन्होंने एक ऐसी जगह पर रुकना पड़ा जहां पर लोग पशुपालन किया करते थे। उसी के अगले दिन 25 दिसंबर को मरियम ने यीशु मसीह को जन्म दिया।

यीशु मसीह के जन्म स्थल से कुछ दूरी पर कुछ चरवाहे भेड़ चरा रहे थे। कहा जाता है कि भगवान स्वयं देवदूत का रूप धारण कर वहां आए और उन्होंने चरवाहों से कहा कि इस नगर में एक मुक्तिदाता का जन्म हुआ है ये स्वयं भगवान

ईसा हैं। देवदूत की बात पर यकीन करके चरवाहे उस बच्चे को देखने गए। लोगों का मानना था कि यीशु ईश्वर का पुत्र है और ये कल्याण के लिए पृथ्वी पर आया है। मान्यता ये भी है कि प्रभु यीशु मसीह ने ही ईसाई धर्म की स्थापना की थी। यही वजह है कि 25 दिसंबर को क्रिसमस के त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि सांता का नाम संत निकोलस है। संत निकोलस का जन्म जीसस की मौत के करीब 280 साल बाद एक बहुत ही अमीर परिवार में मायरा में हुआ था। निकोलस ने अपने माता पिता को बचपन में ही वो दिया था। संत निकोलस काफी अमीर थे। वे अपनी दयालुता और उदारता के लिए जाने जाते हैं। वे हमेशा गरीबों की सहायता करते थे। यहां तक कि उन्होंने अपनी सारी संपत्ति जरूरतमंदों की सेवा में लगा दी थी। उन्हीं संत निकोलस को आज सेंटा क्लॉस के नाम से जाना जाता है।

सांतासंत निकोलस हमेशा आधी रात को ही गिफ्ट देते थे वह भी लोगों से छिपकर। क्योंकि उन्हें लोगों को उपहार देते दिखना पसंद नहीं था। वह लोगों से अपनी पहचान छिपाकर रखते थे। संत निकोलस से जुड़ी एक बहुत ही मशहूर कहानी है। एक गरीब व्यक्ति था उसकी तीन बेटियां थी। लेकिन उस व्यक्ति के पास अपनी बेटियों की शादी के लिए पैसा नहीं थे। वह अपनी बेटियों से मजदूरी कराने के लिए मजबूर था। जब यह सारी बात निकोलस को पता चली तो वह उस व्यक्ति के घर आधी रात को पहुंचे। वह दरवाजे से न जाकर उसके घर की चिमनी के पास पहुंचे और चिमनी के पास सूख रहे मौजे में सोने के सिक्के से भरी थैली रख गए। इसके बाद उनकी गरीबी दूर हो गई। कहा जाता है कि उस दिन के बाद से ही क्रिसमस की रात बच्चे इस उम्मीद में मोजे बाहर लटका कर जाते हैं कि सुबह उन्हें उनके मनपसंद गिफ्ट सांता देकर जाएंगे।

फादर विलियम बताते हैं- 'सैंटा क्लॉज का सबंध ईसा मसीह के जन्म से नहीं है। ये तीसरी शताब्दी के एक संत थे। फादर निकोलस बहुत ही मजाकिया किस्म के थे और बच्चों से ढेर सारा प्यार करते थे। जब भी क्रिसमस आता था वो जोकर जैसा ड्रेस पहनकर बच्चों के बीच में जाते थे और बच्चों को गिफ्ट बांटा करते थे तो ये बहुत बाद में तीसरी शताब्दी से शुरू हुआ। वास्तव में सांता क्लॉज का जो कांसेप्ट है ये मार्केट से जुड़ा हुआ है। 18वीं शताब्दी में अमेरिका के मार्केट ने बहुत बढ़ा चढ़ा के बताया कि ये सैंटा क्लॉज हैं जो बच्चों को गिफ्ट दिया करते हैं तो ये 18वीं शताब्दी में ही ज्यादा प्रचलित हुआ।'

सांता क्लॉज को लेकर कई कहानियां हैं। कई इतिहासकार ओडिन को सांता क्लॉज मानते हैं। वहीं, कुछ इतिहासकार संत निकोलस को सांता मानते हैं। आसान शब्दों में कहें तो सांता को लेकर जानकारों में मतभेद है। ओडिन के बारे में ऐसा कहा जाता है कि ईसाई धर्म के पहले त्योहार पर शिकार के लिए जाते थे। ऐसी मान्यता है कि उन्हें सांता माना गया और वर्तमान समय में सांता बर्फीली जगह पर रहते हैं, जो सांता स्लेस पर बैठकर घर-घर जाकर बच्चों को उपहार देते हैं। हालांकि, प्रभु यीशु का जन्म इसरायल में हुआ है। अत: ओडिन को लेकर लोगों में मतभेद है।

बहरहाल, क्रिसमस के दिन तो बच्चों को सांता क्लॉज का खासतौर से इंतजार रहता है क्योंकि इस दिन वह बच्चों के लिए ढ़ेर सारे उपहार और तरह-तरह के खिलौने जो लेकर आता है। ईसाई समुदाय के बच्चे तो सांता क्लॉज को एक देवदूत मानते रहे हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि सांता क्लॉज उनके लिए उपहार लेकर सीधा स्वर्ग से धरती पर आता है और टॉफियां, चॉकलेट, फल, खिलौने व अन्य उपहार बांटकर वापस स्वर्ग में चला जाता है। बच्चे प्यार से सांता क्लॉज को 'क्रिसमस फादर' भी कहते हैं।

सांता क्लॉज के प्रति न केवल ईसाई समुदाय के बच्चों का बल्कि दुनिया भर में अन्य समुदायों के बच्चों का आकर्षण भी पिछले कुछ समय में काफी बढ़ा है और इसका एक कारण यह है कि विभिन्न शहरों में 25 दिसम्बर के दिन सांता क्लॉज बने व्यक्ति विभिन्न सार्वजनिक स्थलों अथवा चौराहों पर खड़े हर समुदाय के बच्चों को बड़े प्यार से उपहार बांटते देखे जा सकते हैं।

**द्वारका, नई दिल्ली**

❑❑❑

अवनीश कुमार गुप्ता

# सनातन संस्कृति

ऋषि-मुनि तपस्वी महान,
ज्ञान का जिसने किया दान।
लोककल्याण में रत थे सदा,
उनसे ही सजी हमारी वंदना।

सर्वजन हिताय सुख की चाह,
हर दिल में जगाए विश्वास का प्रकाश।
संस्कृति में छिपा वो गूढ़ ज्ञान,
बिखेरे जो प्रेम और सम्मान।

आत्मबोध का जगाए दीप,
हर मन में भर दे नई सजीव।
ज्ञान का सिंचन करते रहे,
ऋषि-मुनि युगों से पथ दिखाते रहे।

लोककल्याण में है हमारी माटी,
स्नेह से सजी अपनी ये थाती।
सच्ची साधना और सत्कार,
भारतीय संस्कृति का आधार।

योग और ध्यान की है परंपरा,
जीवन में लाए संतुलन और सवेरा।
समर्पित ऋषि, तपस्वी महान,
धर्म का किया उन्होंने सम्मान।

सभी के सुख की कामना सदा,
प्रकृति से लेकर मानव तक जुदा।
हर जीव का रखे जो मान,
वही सच्चा है भारतीय ज्ञान।

**प्रयागराज 211008, उत्तर प्रदेश**

डॉ. कविता विकास

# ग़ज़ल

मन हो रहा है प्यार में सुलगा हुआ पलाश
अंतस में ज्यों वनों के है दहका हुआ पलाश

होतीं फजाएँ जब भी खिजाओं के कैद में
तब खींचता है दूर में खिलता हुआ पलाश

कटते हुए वनों पे है कितना उदास वह
अक्सर ही हमने देखा है रोता हुआ पलाश

सीने में एक आग धधकनी ही चाहिए
करता है आरजू यही गिरता हुआ पलाश

जलता है धूप में जो निखरता भी है वही
संदेश देता है यही हँसता हुआ पलाश

आहट है वो वसंत की, चाहत है फाग की
जीवन हमारा रंग से भरता हुआ पलाश

अहसास हिज्र का है, वो अहसास प्यार भी
सीरत में आदमी के है रंगा हुआ पलाश

**फ्लैट नम्बर-टी/1801,**
**सेक्टर-121, होम्स-121,**
**नौएडा, पिन-201301, उत्तर प्रदेश**

❑❑❑

डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव

# मैं अकिंचन

हतप्रभ हूँ! परिवर्तन ये हो गया कैसे?
मेरा अस्तित्व तुझमें घुल गया कैसे??
मेरा अभिज्ञान नाम अप्रतिम था,
नाम अभिज्ञान मिट गया कैसे?
तुमने माया अदभुत दिखाई है,
दिव्य चमत्कार हो गया कैसे?
प्रकाश पुञ्ज किरण आते ही,
सारा अँधियारा मिट गया कैसे?
मेरा व्यक्तित्व पृथक लगता था,
तू धमनियों में बहने लगा कैसे?
जगत सम्बन्ध सभी मिथ्या हैं,
ज्ञान कटुसत्य हो गया कैसे?
मान-अपमान सब निरर्थक है,
ये सत्य-भान हो गया कैसे?
मैं खल, कामी, मूढ़, अकिंचन,
मेरे अवगुण भुला दिया कैसे?
अवगुणों से भरा मेरा जीवन,
तुमने अनदेखा कर दिया कैसे?
मैं तो बस नाम तेरा जपता था,
अजपा-जाप होने लगा कैसे?
मैं तेरा भक्त तुम मेरे भगवन,
द्वैत से अद्वैत हो गया कैसे?
मैं आहत-नाद सदैव सुनता रहा,
अनाहतनाद सुनने लगा कैसे?
ये एषणा थी मैं तुम्हारा हो जाऊँ,
मैं तेरा हुआ तू मेरा हो गया कैसे?
आती जाती प्रति श्वासों से मेरी,
बोध सो-अहम होने लगा कैसे?
तुम तो तुम थे और मैं, मैं ही था,
आज मैं मैं से तुम हो गया कैसे?
ना कोई भय ना भविष्य की चिंता,
मैं भय, चिन्तामुक्त हो गया कैसे?
हूँ तुझको कहाँ कहाँ भटका,
ध्यान में तुझको पा गया कैसे?
शिव हो तुम,सत्य हो, सुन्दर हो,
ये अकिंचन तुम्हें भा गया कैसे?
ना कोई पात्रता ना गुण मुझमें,
मैं कृपा पात्र बन गया कैसे?
तेरी कृपा की ही ये परिणति है,
मैं कुपात्र सुपात्र बन गया ऐसे।
जो भी तुम चाहो लिखवा लेते हो,
मैं अचंभित हूँ कि लिख गया कैसे?

अंधेरी, मुंबई

❑❑❑

# सादा शादियाँ एवं आध्यात्म का अनुपम दृश्य
# निरंकारी सामूहिक विवाह
## महाराष्ट्र समेत देश-विदेश के 96 नव युगल परिणय सूत्र में बंधे

दिल्ली, 25 नवम्बर, 2024- संत निरंकारी मंडल के सचिव आदरणीय जोगिन्दर सुखीजा ने जानकारी देते हुए बताया कि समाज कल्याण विभाग की ओर से विगत 21 नवम्बर को संत निरंकारी आध्यात्मिक स्थल समालखा में निरंकारी सामूहिक सादा शादियों का एक ऐसा अनुपम दृश्य प्रदर्शित हुआ जिसमें भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों जैसे बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू एवं कश्मीर, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल के अतिरिक्त दूर देशों जिनमें आस्ट्रेलिया, यू.एस.ए. इत्यादि प्रमुख है से शामिल हुए लगभग 96 नव-युगल सतगुरु माता जी एवं आदरणीय निरंकारी राजपिता जी की पावन हजूरी में परिणय सूत्र में बंधे तथा अपने मंगलमयी जीवन की कामना हेतु पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर निरंकारी मिशन के अधिकारी-गण, वर-वधू के माता-पिता, सगे-सम्बन्धी एवं मिशन के अनेक श्रद्धालु भक्तों की उपस्थिति रहीं। सभी ने इस दिव्य नजारे का भरपूर आनंद प्राप्त किया।

सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आरम्भ पारम्परिक जयमाला एवं निरंकारी शादी के विशेष चिन्ह सांझा-हार द्वारा हुआ। उसके उपरांत भक्तिमय संगीत के साथ मुख्य आकर्षण के रूप में निरंकारी लावों का हिंदी भाषा में प्रथम बार गायन हुआ जिसकी प्रत्येक पंक्ति में नव-विवाहित युगलों के सुखमयी गृहस्थ जीवन हेतु अनेक कल्याणकारी शिक्षाएं प्रदत्त थी। नव विवाहित युगलों पर सतगुरु माता जी, निरंकारी

राजपिता जी एवं वहां उपस्थित सभी जनों द्वारा पुष्प-वर्षा की गई और उनके कल्याणमयी जीवन हेतु भरपूर आशीर्वाद प्रदान किया गया।

उल्लेखनीय है कि प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला यह पावन आयोजन अपनी सादगी बिखेरता हुआ जाति, धर्म, वर्ण, भाषा जैसी संकीर्ण विभिन्नताओं से ऊपर उठकर एकत्व का सुंदर स्वरूप प्रदर्शित करता है।

नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सतगुरु माता जी ने फरमाया कि गृहस्थ जीवन के पवित्र बंधन में नर और नारी दोनों का ही समान स्थान होता है जिसमें कोई बड़ा अथवा छोटा नहीं अपितु दोनों की महत्ता बराबर की होती है। यह एक अच्छी सांझेदारी का उदाहरण है।

सतगुरु माता जी ने सांझे हार के प्रतीक का उदाहरण दिया कि जिस प्रकार सांझा हार एकता के भाव को दर्शाता है ठीक उसी प्रकार गृहस्थ जीवन में रहकर सभी रिश्तों को

महत्व देते हुए, सबके प्रति आदर भाव अपनाकर अपनी जिम्मेदारियों को निभाना है। गृहस्थ जीवन के सभी कार्यों को करते हुए नित्य सेवा, सुमिरण एवं सत्संग के साथ इस निरंकार का आसरा लेकर सुखद जीवन जीना है। नि:संदेह हर प्रांत से आये हुए नव युगलों द्वारा दो परिवारों के मिलन का एक सुंदर स्वरूप आज यहां प्रदर्शित हुआ।

अंत में सतगुरु माता जी ने सभी नव विवाहित जोड़ों के जीवन हेतु शुभ कामना करते हुए उन्हें आनंदमयी जीवन का आशीर्वाद दिया।

**-राकेश मुटरेजा**
**मेंबर इंचार्ज, प्रेस एवं पब्लिसिटी विभाग**

## गतिविधियां-

**पिछले दिनों ठाणे में आसरा मुक्तांगन के सहयोग से डीएचएल तथा लर्निंग लाइन फाउंडेशन द्वारा अयोजित कार्यक्रम में सहभागियों को प्रमाण पत्र देती हुई, आसरा मुक्तांगन की प्रतिनिधि- श्रीमती शबाना पटेल।**

## बदअमनी है बेचैनी

गुरू ज्ञान से जन्म प्यार का हृदय में हो जाता है।
सारे ही संसार में फिर प्यार अमन ले आता है।

यहां अमन हो वहां अमन हो अमन से सारे रह पायें।
ऐसा हो कुछ अमन के सारे लोग पुजारी बन जायें।

बदअमनी है बेचैनी है अमन कहीं पर खो गया।
दानवता के डर से मानो दूर जहां से हो गया।

अमन को कायम रखना होगा है संसार बचाना जो।
कहे **'हरदेव'** सकल दुनिया को रहने योग्य बनाना।

**(हरदेव वाणी)**

## आगामी अंक में...

साथियो! भारत उत्सवों का देश है। हम छोटे-बड़े सभी त्योहारों का उन्मुक्त होकर लुत्फ़ उठाते हैं। 'आसरा मुक्तांगन' समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान जैसे विषयों की धुरी पर निरंतर आगे बढ़ रही है। आप अपनी कविता, कहानी या अन्य लेख हमें हमारे निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं। आप अपने आलेख सीधे संपादक महोदय को भी भेज सकते हैं। 30 दिसंबर 2024 तक मिले लेखों पर विचार किया जाएगा।

**ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com**
**व्हाट्सअप- 9152925759**

पत्रिका में प्रकाशित
रचनाओं में लेखकों के अपने विचार हैं।
संपादक का इनके साथ सहमत होना
आवश्यक नहीं हैं।
- संपादक

!! हरि ओम !!

# वसुंधरा फाउंडेशन, ठाणे

**(पंजीकरण संख्या-ई / 2824 / ठाणे / दिनांक 11/10/2002)**

## ब्रह्मविद्या श्वसन और विचार का अभ्यास है
## शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने की कुंजी

- **ब्रह्मविद्या क्या है?**

'ब्रह्मविद्या' योग और दर्शन का एक प्राचीन विज्ञान है। सर्वोच्च परमात्मा को 'ब्रह्म' कहा जाता है। अर्थात् जिसे हम ईश्वर, परमेश्वर, भगवान कहते हैं, उसका ज्ञान 'ब्रह्मविद्या' के नाम से जाना जाता है। 'ब्रह्मविद्या' हमें सिखाती है कि हर इंसान भगवान का अंश है, यानी उसके भीतर दिव्यता छिपी हुई है और यही कारण है कि हर इंसान में सभी कठिनाइयों और समस्याओं पर काबू पाने की शक्ति होती है। 'ब्रह्मविद्या' इस दिव्यता, इस शक्ति को कैसे जागृत किया जाए इसकी निश्चित विधियाँ सिखाती है।

- **ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम में क्या पढ़ाया जाता है?**

ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम सही श्वसन और सही सोच पर जोर देता है। वैकल्पिक रूप से, यह सांस और विचार का अभ्यास है, जिस पर संपूर्ण मानव जीवन आधारित है। सांस और विचार के बिना, जीवन का विचार ही असंभव है। क्योंकि इन दोनों चीजों का इस्तेमाल हम जन्म से ही अनजाने में करते आ रहे हैं। लेकिन किसी ने हमें यह नहीं सिखाया कि इसका उपयोग कैसे किया जाए। कोई भी स्कूल सही साँस लेना और सही सोच नहीं सिखाता। हैरानी की बात यह है कि औसत व्यक्ति अपने फेफड़ों की क्षमता का केवल 10% ही उपयोग करता है। परिणामस्वरूप, परिवेशी वायु से थोड़ी मात्रा में श्वसन वायु अंदर ली जाती है। फेफड़ों की क्षमता का कम उपयोग फेफड़ों की परत को मोटा करने का कारण बनता है। शरीर में प्राणवायु की आपूर्ति कम होने के कारण चलते समय सांस फूलना, सीढ़ियां चढ़ते समय सांस फूलना महसूस होता है। अस्थमा, श्वसन रोग, रक्त शुद्धि न होना आदि अनेक रोगों के लोग शिकार होते हैं।

- **ब्रह्मविद्या सीखने के क्या फायदे हैं?**

उन अभ्यासकर्ताओं के अनुभव के आधार पर जिन्होंने इस अनुशासन को सीखा है और पिछले कुछ वर्षों में नियमित अभ्यास बनाए रखा है, और अपने स्वयं के शिक्षण अनुभव से, मैं निम्नलिखित लाभों के बारे में कह सकता हूँ।

1. ब्रह्मविद्या अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य की नींव रखती है।
2. इसमें सिखाए गए उचित सांस, प्राणायाम और ध्यान अभ्यास के माध्यम से कई लोगों ने अस्थमा, जोड़ों के दर्द, उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), मधुमेह, हृदय रोग, मानसिक कमजोरी और अवसाद जैसी कई बीमारियों पर काबू पाया है।

उपरोक्त फायदों को ध्यान में रखते हुए ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने का निर्णय लें। आपका जीवन निश्चित रूप से एक नया आनंदमय मोड़ लेगा। आपका जीवन खुशियों से भर जाएगा। जो कोई भी सांस लेता है, पुरुष या महिला, कक्षा में शामिल हो सकता है।

**प.पू. साठे गुरुजी उर्फ बालयोगी मुकुंद- संस्थापक वसुंधरा प्रतिष्ठान**

समानता, सद्भाव और सामाजिक न्याय में
अतुलनीय योगदान देने वाले
भारत रत्न से सम्मानित
भारतीय संविधान के शिल्पकार

# भीमराव रामजी आम्बेडकर

(डॉ० बाबासाहब आम्बेडकर)

की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि

(14 अप्रैल 1881 – 6 दिसंबर 1956)

RNI NO. MAHHIN/2012/45032

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक महानंदा एम. शिरकर द्वारा साई ऑफसेट, डी-39, अमरज्ञान इंडस्ट्रियल इस्टेट, एस.टी. डेपो के सामने खोपट, ठाणे (महाराष्ट्र) से मुद्रित एवं मंगल प्रभात, सूर्य नगर, विटावा, ठाणे-400605 से प्रकाशित
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com मोबाइल- 09029784346, 08108400605